thearyasamaj.org

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

2 मार्च व 9 मार्च 2014

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : 10 रु.

वर्ष: 70 अंक : 48-49

सृष्टि संवत् 1960853114

2 मार्च व 9 मार्च 2014

दयानन्दब्द 189

वार्षिक : 100 रू.

आजीवन : 1000 रू.

दूरभाष : 2292926, 5062726

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

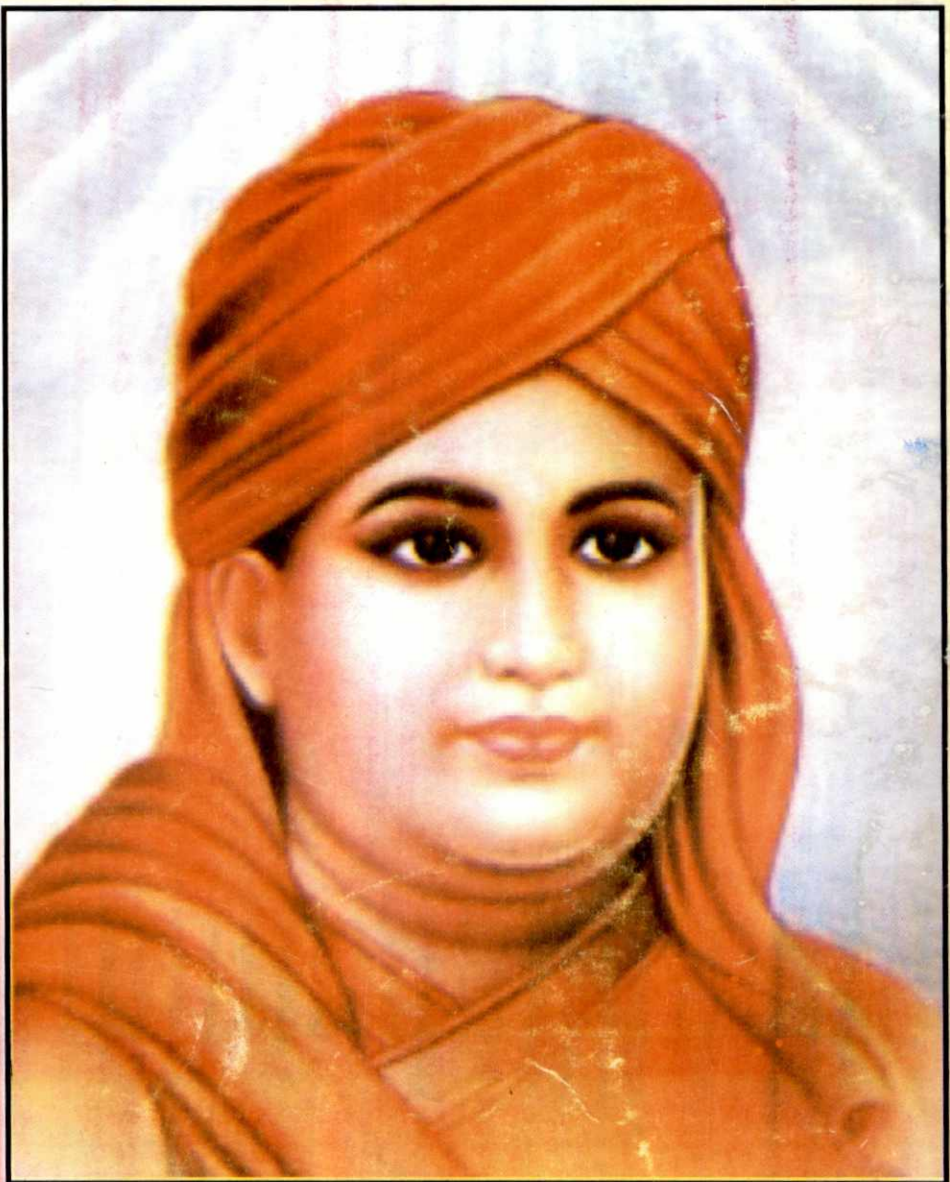

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

दिनांक 23 फरवरी 2014 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में हुए सभा के त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) में सर्वसम्मति से श्री सुदर्शन शर्मा जी को चौथी बार सभा का प्रधान निर्वाचित होने पर उनका फूलमालाओं से सम्मान करते हुए सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। उनके साथ खड़े हैं श्री सरदारी लाल जी आर्य, चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, श्री रणजीत आर्य जी, श्री विपिन शर्मा जी, श्रीमती ज्योति नंदा जी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री जगदीश राज जी, श्री भारत भूषण मेनन एवं अन्य प्रतिनिधि।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के चौथी बार प्रधान निर्वाचित होने पर श्री सुदर्शन शर्मा जी पंजाब भर से आए हुए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए।

thearyasamaj.org

शिवरात्रि पर्व राष्ट्रीय बोध का अवसर

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शिवरात्रि के अवसर पर बालक मूलशंकर को जगत् के नियामक सच्चे शिव का बोध हुआ था। सच्चे शिव की खोज में युवा ब्रह्मचारी दयानन्द वर्षों तक पर्वतों, कन्दराओं और जंगलों में निरन्तर प्रयत्नशील रहे। वर्षों की साधना के पश्चात अपने तप और परिश्रम से जब उन्हें सच्चे शिव का सानिध्य एवं मुक्ति का अवसर मिला भी तब वह सच्चे गुरू विरजानन्द की दक्षिणा एवं स्वत: स्फूर्त प्रेरणा के फलस्वरूप अपनी व्यक्तिगत मुक्ति की अपेक्षा अपने राष्ट्र एवं भारतीय जनता की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील हो गए। 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के विफल हो जाने के बाद जब ऋषि ने जब स्वराष्ट्र और भारतीय जनता के उद्धार का पूर्ण व्रत लिया तब उन्होंने अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए स्वभाषा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति और स्वदेशी शासन की प्रतिष्ठा के लिए अलख जगाई। मैडम बलावत्सकी ने यह कहा था कि शंकराचार्य के बाद कुरीतियों के अन्त और प्राचीन भारतीय परम्पराओं की प्रतिष्ठा के लिए महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किया है वह अद्वितीय है। महर्षि ने अपनी गुरू दक्षिणा में देश की कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं विदेशी चिन्तन एवं प्रभुत्व का अन्त करने के लिए जो व्रत लिया था उसे आजीवन निभाया।

महर्षि दयानन्द जी ने भली प्रकार समझ लिया था कि देश के सामाजिक एवं धार्मिक उत्थान के बिना देश का राजनीतिक उत्थान सम्भव नहीं है। फलत: उन्होंने देश की कुरीतियों, विनाशकारी रूढ़ियों, बुराईयों, जात-पात, छूआछूत आदि बुराईयों का अन्त करने तथा गोरक्षा, स्त्री शिक्षा एवं आर्य जाति के उद्धार के लिए निरन्तर प्रयास किया। परन्तु आज देश की स्थिति अत्यन्त दयानीय है। अंग्रेजों के शासन से पूर्व हमारा देश सब प्रकार से परिपूर्ण था। हमारे देशवासियों को अपनी सभ्यता, संस्कृति और अपने राष्ट्र पर गौरव था। परन्तु अंग्रेजों के शासन ने हमारे देश को राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विभाजित कर दिया। हमारी शिक्षा प्रणाली को खत्म कर दिया। आज भारत के दोनों ओर भारत विरोधी साम्प्रदायिक मुस्लिम राष्ट्र अपनी साम्प्रदायिक शक्ति एकत्र करने के लिए प्रयत्नशील हैं। आज देश में अनेक प्रकार की बुराईयां फैल रही हैं। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने की होड़ मची हुई है। विदेशी कुसंस्कृति के कुप्रभाव से आज की पीढ़ी अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से दूर होती जा रही है। हमारा देश भ्रष्टाचार, अश्लीलता, नशे तथा अनेक प्रकार की बुराईयों से ग्रसित है। आज आर्य समाज के सामने जो समस्याएं है, वे आर्य समाज को पुकार रही है पर आर्य समाज जगने का नाम नहीं ले रहा है। परिणामस्वरूप देश की राजनीति दिशाहीन हो चुकी है। देश का नेतृत्व या तो समस्याओं को ठीक तरह से समझ नहीं पा रहा है या जानबूझ कर उपेक्षा कर रहा है। परिणामत: स्वार्थपरता और पदलोलुपता की राजनीति देश को रसातल की ओर धकेल रही है। आज देश के क्षितिज पर घोर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। विदेशी धन वोट की राजनीति को प्रभावित करने के लिए पानी की तरह बहाया जा रहा है। सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटनाएं दिनोंदिन बढती जा रही है। परन्तु किसे इस बात की चिन्ता है कि धर्म परिवर्तन का सम्बन्ध केवल धर्म से ही नहीं अपितु राष्ट्रीयता से भी है।

जब देश इस तरह की आन्तरिक अव्यवस्था, बाहरी षड्यन्त्रों, तथा अपनी संस्कृति के उपर हो रहे आक्रमणों के खतरे से आक्रान्त हो उस स्थिति में आर्य समाज जैसी संस्थाओं के ऊपर विशेष उत्तरदायित्व है। ऋषिबोध पर्व वस्तुत: राष्ट्रीय बोध का अवसर है। जिस तरह महर्षि दयानन्द जी ने सच्चे शिव की खोज में अपनी व्यक्तिगत मुक्ति को भुला दिया था, उसी प्रकार आर्य समाज को अपना संगठन मजबूत करके इन सामाजिक बुराईयों को तथा राष्ट्रीय संकट के निवारण में अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। अकेले दृढव्रती महर्षि दयानन्द ने सच्चा बोध प्राप्त करके भारत राष्ट्र में नवनिर्माण की अलख जगा दी थी। आज फिर आवश्यकता है महर्षि दयानन्द की तरह सच्चा बोध प्राप्त करने की जिस बोध के द्वारा हम समाज में फैल रही अनेक प्रकार की कुरीतियों, समस्याओं तथा कुप्रथाओं से लड़ सके। महषि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके जो उत्तरदायित्व आर्यों को सौंपा है उसे पूर्ण करने के लिए हमें कमर कसनी होगी। केवल शिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द का बोध पर्व मनाने तथा महर्षि का गुणगान करने से हम अपने कर्त्तव्य का निवर्हन नहीं कर सकते। हमें साकार रूप में उसे अपने जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है केवल इन नियमों का पाठ करने से संसार का कल्याण नहीं होगा जब तक हम वास्तव में इसे क्रियान्वित नहीं करेंगे। इसलिए आओ इस महान बोधोत्सव के पर्व पर हम आत्मचिन्तन करें कि हम कहां पर खडे है। क्या हम आर्य समाज की विचारधारा को अपने जीवन में आत्मसात कर रहे हैं या नहीं? शिवरात्रि आत्म बोध का पर्व है। दूसरों को जगाने से पहले हमें खुद जागना होगा। तभी हमारा ऋषि बोध का पर्व मनाना सार्थक होगा।

thearyasamaj.org

हम कब तक सोते रहेंगे

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शिवरात्रि की रात बहुत से लोग जागते हैं परन्तु जागते हुए भी वे सोते ही रहते हैं। वे जिस शिव को देखने के लिए रात भर जागते रहते हैं वह फिर भी उन्हें दिखाई नहीं देता। परन्तु एक बालक रात भर जागता रहा ताकि शिव के दर्शन हो सके और उसे हो गए। उसकी बाहरी आँखों ने शिव को नहीं देखा परन्तु अन्दर की आँखों ने जिसे हम ज्ञान चक्षु कहते हैं उनके द्वारा उसने सच्चे शिव को देख लिया। न जाने कब से इस देश के लोग शिव की पूजा करते चले आ रहे हैं। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में शिव का कई रूपों में वर्णन भी होता है। परन्तु शिव कौन है, कैसा है, इसका उत्तर आज तक कोई नहीं दे सका। मूलशंकर के मन में जब यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि जिस शिव को वह देख रहा है, वह केवल एकमात्र पत्थर है और उसमें इतनी शक्ति भी नहीं कि एक चूहे को हटा सके। उसके साथ ही उसके मन में यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ कि यह तो वह शिव नहीं जिसके विषय में उसके पिता ने कहा था कि यही कल्याणकारी शिव है। जो अपना कल्याण नहीं कर सकता वह किसी दूसरे का क्या कल्याण करेगा। इस विचार ने उसे बेचैन कर दिया और वह वास्तव में सच्चे शिव के ढूंढने के लिए घर से निकल पड़ा। जिस दिन मूलशंकर के मन में यह प्रश्न पैदा हुआ कि असली शिव कहां है? उसी दिन वास्तव में वह जाग पड़ा। उससे पहले उसकी आँखें बन्द थी और उसे मालूम नहीं था कि शिव कौन है और कहां है? परन्तु जब उसकी आँखें खुली तो सच्चे शिव की तलाश करते करते उसे अपने अन्दर ही एक नई ज्योति जलती दिखाई दी। उस ज्योति को और अधिक प्रज्वलित किया उनके गुरू स्वामी विरजानन्द जी ने उसके पश्चात वे दयानन्द के रूप में संसार के सामने आए और जो सन्देश उन्होंने मनुष्य मात्र को दिया यदि हम उस पर चलने का प्रयत्न करें तो सम्भव है कि हमें भी उस सच्चे शिव के दर्शन हो जाएं। जो मनुष्य यह समझते हैं कि रात भर जागरण करने से या शिव की पिण्डी के ऊपर जल चढ़ाने से हमारी कामनाएं पूर्ण हो जाएं तो वे बिना परिश्रम के ही फल को प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु जिस दिन मूलशंकर ने वास्तविकता को समझा था और उसे विश्वास हो गया था कि पत्थर की एक मूर्ति से भगवान नहीं मिल सकते, बल्कि उसके लिए त्याग और तपस्या की आवश्यकता है। उसी दिन से वह तपस्या के लिए घर से निकल पड़े। संसार का मोह छोड़कर उन्होंने सच्चे शिव को प्राप्त करने का लक्ष्य बनाया। जो व्यक्ति मूलशंकर की तरह जाग कर सारी स्थिति को समझने का प्रयास करते हैं सफलता भी अन्त में उन्हीं को मिलती है। इसलिए तो कहा है कि जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।

महर्षि दयानन्द जी स्वयं भी जागे और हमे भी जगाने का प्रयत्न किया। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य दिया और आर्य समाज के छठे नियम में कहा कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस दिन बोध प्राप्त करके सारे संसार का कल्याण किया था। उन्होंने अपने गुरू की आज्ञा से मानव मात्र के कल्याण के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया था और सारे देश में क्रान्ति की ज्वाला जगाई थी देश में बढते हुए आड़म्बरों, पाखण्ड़ों, मत-मतान्तरों और अन्धविश्वासों के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द करते हुए सबसे पहले अपनी पाखण्ड खण्डिनी पताका हरिद्वार के कुम्भ के मेले में फहराई थी जिससे सारे मेले में हलचल मच गई थी। महर्षि दयानन्द जी ने जहां धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति पैदा की वहीं पर उन्होंने राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में फैली बुराईयों को दूर करने का भी प्रयास किया। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करते हुए श्रेष्ठ और सभ्य समाज को बनाने का प्रयास किया। आर्य समाज की स्थापना करते हुए भी उन्होंने इन्हीं सार्वभौम उद्देश्यों को सामने रखा ताकि उनके बाद भी संसार में मानवता के कार्य होते रहें। शिवरात्रि के इस पावन पर्व पर हमें यह संकल्प करना चाहिए कि हम भी सच्चे शिव की पूजा करेंगे। सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लडने का प्रयास करेंगे। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने जिन उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की है हम उन उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूर्ण करने का प्रयास करें। एक छोटी सी घटना ने मूलशंकर को दयानन्द बना डाला। अगर इस बोधोत्सव के पावन पर्व पर हम भी चिन्तन करते हैं और मनन करते के कि हम कहां पर खड़े हैं तभी हमारा इस बोधोत्सव के पर्व को मनाना सार्थक हो सकता है। हमारा चिन्तन होना चाहिए कि क्या हम जाग गए हैं या अभी सोए हुए हैं। जब तक हम स्वयं नहीं जागेगें तब तक हम दूसरों को भी नहीं जगा सकते। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके हमें जो लक्ष्य दिया है उसे सोकर या निष्क्रिय रहकर नहीं प्राप्त किया जा सकता है। यही इस शिवरात्रि (कल्याण की रात्रि)का पावन सन्देश है।

thearyasamaj.org

महाशिवरात्रि और दयानन्द

ले०—श्री सुधीर शर्मा जी कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारतवर्ष के इतिहास में सदियों से आस्तिक हिन्दु जनता प्रतिवर्ष शिवपुराण की मान्यता के अनुसार शिव की विशेष आराधना के लिए महाशिवरात्रि के पवित्र व्रतोपवास का अनुष्ठान करती चली आ रही है। ऐसी ही एक महाशिवरात्रि सम्वत् १८९४ की आई थी जिसने चौदह वर्ष के बालक मूलशंकर के निर्मल और कोमल चित्त को आश्चर्यचकित कर दिया था। शिवदर्शन की प्रबल लालसा के वशीभूत दयानन्द शिव मन्दिर में अपने पिता तथा अन्य श्रद्धालुओं के निद्रा में लीन हो जाने के उपरान्त भी जागरण कर रहे थे। रात्रि के तृतीय प्रहर पर उन्होंने देखा कि शिवपिण्डी पर अपवित्र चूहे उछल कूद कर चढ रहे हैं और उस पर चढाया हुआ भक्तों का प्रसाद मिष्ठान आदि बडे आनन्द से खा रहे हैं और उसी मूर्ति के उपर अपना मल मूत्र त्याग रहे हैं। जैसे बादलों के बीच बिजली कड़कती है और जैसे वायु से ताड़ित महासागर में ऊंची-ऊंची तरगें उठती हैं। वैसे ही दयानन्द के हृदय में भी इस घटना से संचालित विचार और प्रश्नों के सितारे चमक उठे। शंका से युक्त होकर उन्होंने सोचा कि शिव कथा में तो मैंने सुना था कि शिव त्रिशूल धारी है उसका वाहन वृषभ और निवास कैलाश है और अपने पाशुपत अस्त्र से दैत्यों का संहार करता है। तो क्या वही महादेव यह मूर्त्ति हो सकता है? इसके सिर पर तो ये अपावन चूहे दौड़ लगा रहे हैं। इसमें तो इन तुच्छ जीवों को भगाने का भी सामर्थ्य नहीं। यह पत्थर की मूर्त्ति महादेव नहीं हो सकती? तो फिर महादेव कहां है, कैसा है? जैसे वायु का तीव्र वेग नौका के मुख को फेर देता है, विशाल चट्टान से टक्कर खाकर नदी का बहाव बदल जाता है, ऐसे ही इस विस्मयकारी घटना से दयानन्द की चित्तवृत्तियां अपने प्रवाह को बदलने लगी।

दयानन्द से पहले और बाद में न जाने कितने लोगों ने चूहों आदि का तांडव कितनी बार शिवलिंगादि मूर्त्तियों पर देखा होगा। लेकिन उनके विश्वास और व्यवहार में एकता न थी। इसलिए उनके जीवन पर उन घटनाओं का प्रभाव नहीं पड़ता था। संसार में कोई धर्म तत्त्व तब तक स्थिर नहीं रह सकता जब तक कि वह मनुष्य में इच्छा और कर्त्तव्य , विश्वास और व्यवहार अथवा विचार और आचार को एक ही नियत रेखा पर खड़ा नहीं कर देता। इच्छा और कर्त्तव्य, विश्वास और व्यवहार की एकरूपता ने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया। तीव्र वैराग्य और कठोर अभ्यास के बल पर वे भारत माता के क्षितिज पर सूर्य के समान प्रकाशित हुए। वेद विद्या से युक्त दयानन्द की अलौकिक ज्ञान प्रतिभा ने रूढिवाद, गुरूडम और पाखण्डों के मायाजाल को तर्क के प्रबल बाणों से भेदकर सदियों से चले आ रहे अज्ञानमय, धर्मविरोधी रीति रिवाजों का पर्दाफाश करके सत्य के सूर्य से मानव जाति को प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द प्राणी मात्र के हितैषी और मानव धर्म के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने वैदिक धर्म को स्वीकार कर वेदों के विषय में चले आ रहे अनर्गल मिथ्या विचारों का खण्डन कर, स्वयं वेदों का भाष्य किया जिसने संसार के विद्वानों की आंखें खोल दी। वैसे तो कई महापुरुष समय-समय पर दुनिया में आए जो किसी न किसी विषय को लेकर मानव की उन्नति के प्रेरणा स्रोत रहे, परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जाति ही नहीं समस्त प्राणी जगत की सर्वांगीण उन्नति का मार्ग दर्शन बड़ी निर्भीकता के साथ किया। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जी ने गुलामी की जंजीर में जकड़े भारतीयों को स्वतन्त्रता के लिए तैयार किया, नारी जाति की दयनीय दशा को देखकर सर्वप्रथम पुनः शिक्षा का अधिकार दिलाया, जाति-पाति की रूढिवादी परम्पराओं को नष्ट कर गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णाश्रम धर्म का पालन तथा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचार व प्रसार किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संस्कृत और हिन्दी का पूर्ण विकास, धर्म के मूल तत्त्व आत्मा के विकास के लिए अहिंसा परमोधर्म का पालन, मन और शरीर की आरोग्यता के लिए मादक पदार्थों के सेवन तथा अश्लील क्रिया कलापों का पूर्णतया बहिष्कार किया।

साम्प्रदायिकता के विकराल रूप को नष्ट करने के लिए रूढिवाद और अन्धविश्वास के आधार पर पनपने वाले तर्कहीन सिद्धान्तों को समाप्त कर विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरने वाले धर्म के सत्य स्वरूप को प्रदर्शित किया। महर्षि दयानन्द जी ने इन्हीं क्रान्तिकारी विचारों के प्रचार और प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की। तभी से आर्य समाज इस पावन पर्व महाशिवरात्रि को बोध रात्रि के रूप में मनाता चला आ रहा है। आशा है कि शिवभक्त उपासक इस महाशिवरात्रि की सच्चाई का बोध करेंगे जिससे हमारा देश वर्तमान की विकृत परिस्थितियों से छूट जाएगा तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार होगा। प्रभु हमें शक्ति दे ताकि हम मानव धर्म और प्रेम की ज्योति का संदेश सर्वत्र भूमंडल पर फैलाकर सच्चे अर्थों में शिव के उपासक बन सकें।

thearyasamaj.org

अभ्युदय का अमर सन्देश -शिवरात्रि

ले०—श्री अशोक पुरुथी जी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

शिवरात्रि के इस पावन पर्व पर युवा मूलशंकर को यह तत्त्वबोध हुआ था कि घरों या मन्दिरों में प्रतिष्ठित मूर्त्ति के रूप में शिव सच्चे भगवान नही हैं। अपने निजी सम्बन्धियों के असामयिक देहावसान के फलस्वरूप उन्हें गृहस्थ से विरक्ति हो गई और वह सच्चे शिव की खोज में निकल पडे। वर्षों के कठिन परिश्रम, तपस्या, साधना एवं सच्चे गुरूओं के सानिध्य में आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय और चिन्तन के बाद जब उन्हें सच्चे शिव की अनुभूति हुई तब उन्होंने केवल अपनी व्यक्तिगत मुक्ति के स्थान पर तथा गुरू विरजानन्द के आदेश के फलस्वरूप व्यक्ति, मानवता, समाज और राष्ट्र की मुक्ति के लिए पुरानी अव्यवस्था, बुरी प्रथाओं और दोषों को दूर कर सामाजिक, राष्ट्रीय एवं मानवीय अभ्युदय के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया। यह उल्लेखनीय है कि ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज आदि तत्कालीन दूसरे सामाजिक सुधार के आन्दोलन पश्चिम से प्रभावित थे। परन्तु महर्षि दयानन्द अपने युग के पहले महामानव थे, जिन्होंने ईसाइयत, इस्लाम और पश्चिम के नवीन ज्ञान विज्ञान के आक्रमण को पूर्णतया निरस्त किया। उन्होंने युक्तियों, तर्क एवं आन्तरिक साक्षियों से इन मजहबों के दोषों को उजागर किया और सच्चे मानव धर्म के रूप में वैदिक धर्म की पुनः प्रतिष्ठा की।

महर्षि दयानन्द जी ने जिस युग में राष्ट्रीय जीवन में प्रवेश किया था उस समय ये विधर्मी प्रचारक देश और धर्म की कुरीतियों, अन्धविश्वासों, और भ्रान्त धारणाओं का ढिंढोरा पीटकर भारत के इतिहास, धर्म, अध्यात्म, दर्शन एवं चिन्तन का उपहास कर रहे थे। उस समय लगभग सभी पश्चिमी ज्ञान विज्ञान से दीक्षित व्यक्ति उन आरोपों को लगभग सत्य मानते थे। उस समय महर्षि ने ईसाईयत और इस्लाम मानने वालों की कुरीतियों, अनाचारों को उजागर कर प्राचीन वैदिक चिन्तन के शाश्वत पानवीय स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया। उन्होंने निराकार, अनेक शक्तियों के एकाकार एक भगवान के चिन्तन एवं प्राचीन वैदिक ग्रन्थों के आधार पर ऐसे आध्यात्मिक स्वरूप को प्रतिपादित किया कि इन पश्चिमी आलोचकों के मुंह बन्द हो गए। महर्षि ने जहां नए विदेशी और स्वदेशी ज्ञान-विज्ञान की अच्छाईयों को ग्रहण करने के लिए सदा तत्परता दिखाई वहां उन्होंने यह तत्त्व चिन्तन भी प्रतिपादित किया कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। इस प्रकार उन्होंने स्पष्ट किया कि व्यक्ति को अपनी उपलब्धियों पर गर्व नहीं करना चाहिए बल्कि उसे प्रत्येक प्राप्ति एवं अवसर को उस आत्मिक शक्ति की प्रेरणा स्वीकार करना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने दूसरा तत्त्व दिया था कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सदा तत्पर रहनार चाहिए।

व्यक्ति और समाज यदि सभी कार्य धर्मानुसार सत्य अड्डैर असत्य का विचार करके करें तो आज की अधिकांश समस्याएं सुलझ सकती है। महर्षि का तीसरा परामर्श था कि प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इसी की व्याख्या है कि यदि व्यक्ति हितकारी नियम पालन में स्वतन्त्र है तो सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए। मानव अपनी उन्नति के इन सिद्धान्तों को स्वीकार कर ले तो परिवार, समाज, प्रदेश, राष्ट्र और मानवता के अधिकांश मतभेद समाप्त हो सकते हैं और हम सच्चे अभ्युदय के मार्ग चल सकते हैं। इस तरह से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द जी ने सच्चे शिव की अनुभूति होने पर भी अपनी व्यक्तिगत उन्नति के स्थान पर समाज, राष्ट्र और मानवता के अभ्युदय के लिए पुरानी कुप्रथाओं, संस्कारों और सिद्धान्तों का परित्याग करके वैदिक चिन्तन के आधार पर सत्य और मानवता के सच्चे धर्म का स्वरूप प्रतिष्ठित किया था। इसी के साथ उन्होंने अपनी और दूसरी मजहबी बुराईयां त्याग कर कुछ सच्चे सिद्धान्त प्रदर्शित किए थे, जिनके आधार पर सच्चे श्रेष्ठ मानव का निर्माण संगठन एवं प्रगति सम्भव है। महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव का बोध होने से मानव समाज ही नहीं प्राणीमात्र के कल्याण के लिए अभ्युदय के जिस मार्ग का प्रदर्शन किया था हम भी उस उत्तरदायित्व को बोध दिवस पर ग्रहण करने का प्रयास करें।

thearyasamaj.org

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०—श्री स्वतन्त्र कुमार जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आत्मविस्मृत भारत को स्वराज्य मन्त्र का प्रथम उद्घोष देने वाले युगपुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म गुजरात राज्य के टंकारा ग्राम में श्री कर्षन जी के घर हुआ था। इनका जन्म का नाम मूलशंकर था। मूलशंकर नैष्ठिक शिक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य बने फिर स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ली। स्वामी पूर्णानन्द जी ने शुद्ध चैतन्य से उनका नाम दयानन्द सरस्वती घोषित किया। स्वामी जी योगाभ्यास की अभिलाषा में अनेक योगियों से मिले। ज्वालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरि इन दोनों योगियों से भली-भांति योग की शिक्षा ग्रहण और संवत् १९१७ में स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में जा पहुंचे। स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी को उत्तम पात्र जानकर प्राणपन से विद्या दान की। विद्याध्ययन के पश्चात स्वामी दयानन्द जी कुन्दन बन गए। गुरूकुल से विद्या पूर्ण करके गुरू दक्षिणा के समय गुरू विरजानन्द जी ने कहा कि दयानन्द समाज में अनेक मत-मतान्तरों से कुरीतियां उत्पन्न हो गई हैं। वैदिक ग्रन्थों का पठन-पाठन समाप्त हो गया है उसे प्रारम्भ करके समाज को सत्य की ओर प्रेरित करो, सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, को दूर करो और लोगों को सन्मार्ग दिखाओ यही मेरी गुरूदक्षिणा है।

स्वामी दयानन्द अपने गुरू के वचनों को स्वीकार करके समाज के उद्धार के लिए प्रवृत्त हो गए। 19वीं शताब्दी में सम्पूर्ण समाज अविद्या रूपी गहन अन्धकार से घिरा हुआ था। ऐसे समाज को कपिल, कणाद, गौतम जैसा पाण्डित्य का धनी, भीष्म सा ब्रह्मचारी, शंकराचार्य सा योगी, राम जैसा मर्यादा पुरूषोत्तम, कृष्ण समान नीतिवान, महात्मा बुद्ध सा वैरागी, व्यास एवं पतंजलि जैसा आध्यात्मिक बहुगुणसम्पन्न दयानन्द प्राप्त हो गया। स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार के लिए अनेक कार्य किए। समाज में प्रचलित मनुष्यकृत दूषित जाति व्यवस्था के स्थान पर कर्म के आधार पर विशुद्ध वर्णव्यवस्था का उपदेश करके मानव जाति का महान उपकार किया। विद्यारूपी सूर्य के अस्त होने से समाज नारी जाति को विद्याध्ययन के अधिकार से वञ्चित कर रहा था ऐसे समय में महर्षि ने विद्या का द्वार खोलते हुए नारी के प्रति उत्पन्न होने वाली दुष्ट मान्यताओं का खण्डन करके स्त्रियों का पठन-पाठन अनिवार्य घोषित किया। शिक्षा के क्षेत्र में इस नवयुग प्रवर्त्तक ने दूषित शिक्षा पद्धति को चुनौती देकर आर्य शिक्षा पद्धति को उपस्थित किया। मानव मात्र के लिए शिक्षा अनिवार्य की और सहशिक्षा का विरोध करके बालक व बालिकाओं के लिए अलग-अलग पठन-पाठन की व्यवस्था दी। वैदिक संस्कृति के इस रक्षक ने आत्मिक उन्नति हेतु यज्ञ, पर्व, संस्कार आदि का लाभ सामने रखते हुए यथार्थ संस्कृति उपस्थित की। जब ईश्वर एक है, धर्म एक है तो संस्कृति अनेक कैसे? स्थान-स्थान की सभ्यताओं में अन्तर हो सकता है परन्तु आत्मिक उन्नति के साधनों में नहीं। आत्मिक उन्नति के साधन ही संस्कृति है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि सभी व्यक्तियों के लिए उन्नति के साधन हैं। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए वैदिक संस्कृति से लाभ प्राप्त करने हेतु संस्कारविधि नामक महान् ग्रन्थ की रचना की। वैदिक आश्रम व्यवस्था का प्रचार करके मानव जीवन का कार्यक्रम उपस्थित किया।

राष्ट्रीयता के तीन आधार हैं इडा, सरस्वती, मही अर्थात् समान भाषा, समान संस्कृति तथा समान मातृभूमि। इसी आधार पर ऋषिवर ने संस्कृत को विशेष महत्व प्रदान किया। राष्ट्र का आधार उसकी संस्कृति है। जब तक तथाकथित संस्कृतियों के स्थान पर संसार के प्रारम्भ से ही सर्वत्र फैली हुई वैदिक संस्कृति को राष्ट्र ग्रहण नहीं करता तब तक राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। ऐसा विचार करके ऋषिवर ने संस्कृति के प्रचार प्रसार में अपना सर्वस्व लगा दिया। राष्ट्र का आधार उसकी मातृभूमि है। जिस भूमि पर हम उत्पन्न हुए जहां का अन्न व वायु हमारे शरीर का पोषक है उस मातृभूमि के प्रति समर्पित हो जाना हमारा कर्त्तव्य है यह ज्ञान कराया।

आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द जी उच्चकोटि के ऋषि थे। अपनी आत्मिक शक्ति से ही उन्होंने वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है सिद्ध कर दिया। एकेश्वरवाद के सिद्धान्त का पोषक यह ऋषि सारे संसार का मूल अर्थात् निमित्त परमेश्वर को मानता है। प्रत्येक व्यक्ति को मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए ईश्वर की उपासना अनिवार्य सिद्ध करता है। सत्यासत्य के निर्णय की कसौटी के लिए महर्षि के नियमों को देखो। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत रहना चाहिए। सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए तभी संसार का उपकार हो सकता है।

आईये इस बोधोत्सव के पर्व पर हम भी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए सार्वभौम नियमों पर चलते हुए सत्य को अपने जीवन के अन्दर उतारने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द की अमूल्य शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करते हुए वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने में अपना योगदान देंगे। जिस प्रकार ऋषि ने बोध पाकर सच्चे शिव को प्राप्त करते हुए संसार को सन्मार्ग दिखाया था उसी प्रकार हम भी महर्षि के जीवन से प्रेरणा लेकर सामाजिक बुराईयों को खत्म करने का संकल्प लें।

thearyasamaj.org

शिवरात्रि : संकल्प पर्व

लेः—श्री रणजीत आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शिवरात्रि एक ऐतिहासिक पर्व है। ऐतिहासिक पर्व इसलिए कि इसी शिवरात्रि ने नवयुग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी के हृदय को सत्य का अन्वेषण करने के लिए बाध्य कर दिया था। यदि शिवरात्रि के व्रत के समय मूषकों द्वारा शिवलिंग पर चढ़ाए गए चावल आदि को खाने की घटना न घटित होती तो सम्भव है आज हम घनघोर अज्ञानान्धकार के जाल में फंसकर छटपटाते रहते। शिवरात्रि ने ही स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन में मूर्ति पूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न कर दी थी। परिणामस्वरूप वह सत्य धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधीर हो उठे और अन्त में समस्त तीर्थों, जंगलों, पर्वतों, का परिभ्रमण करते हुए मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में उन्होंने वेद शास्त्रों सहित समस्त आर्ष साहित्य का अध्ययन कर सत्य शिव को प्राप्त करने का महान संकल्प पूर्ण किया। स्वामी दयानन्द ने वेदज्ञान की प्रबल किरणों से भूमण्डल को आलोकित कर दिया। नवजागरण के इस महारथी ने ऋषि मुनियों की पावन धरती वाला भारत राष्ट्र जाग्रत कर स्वतन्त्रता की पृष्ठभूमि का निर्माण किया। पाखण्ड, अन्धविश्वास, असत्य, अधर्म, कुरीतियों, अन्धमान्यताओं, और अनार्ष ग्रन्थों का जमकर खण्डन किया और समस्त विश्व में वेद निरूपित सामाजिक संरचना का आह्वान किया। शास्त्रार्थ समर में तत्कालीन महारथियों को पराजित कर स्वामी दयानन्द जी ने वेद का डंका बजाया। वैदिक मान्यताओं के प्रचार प्रसार के कार्य को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यों का परम धर्म बताया। स्वामी दयानन्द जी की सिंह गर्जना से ही भारत में नव चेतना , नवशक्ति, नव आशा का संचार हुआ और परिणामस्वरूप भारत में स्वाधीनता का महान् संग्राम सफलतापूर्वक लड़ा जा सका। देश में स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात हमारे राष्ट्रनायकों ने स्वामी दयानन्द जी के कार्यों को सरकारी कार्यक्रमों में सम्मिलित किया, लेकिन राष्ट्र के नवनिर्माण के साथ-साथ पश्चिमी भोगवादी व भौतिकतावादी संस्कृति का प्रचार-प्रसार होने के कारण हम निरन्तर पतनोन्मुख हो गए और आज तो हमारी वैदिक संस्कृति और सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में दिखाई दे रहा है। चारों ओर दानवी वृत्तियों का बोलबाला है। मानवीय मूल्यों का नाश हो रहा है। फलस्वरूप चोरी, डाके, कत्ल, बलात्कार, व्यभिचार, घूसखोरी और भ्रष्टाचार का आज सारे देश में अखण्ड साम्राज्य छाया हुआ है।

यद्यपि महर्षि दयानन्द के कार्यों को मूर्त्त रूप देने का कार्य आर्य समाज कर रहा है, लेकिन पश्चिम की चकाचौंध में भूला समाज उसे स्वीकार करने में तत्पर नहीं दिखाई देता। शिवरात्रि के इस पावन पर्व पर हमें आत्म विश्लेषण करना होगा कि हमारे उपदेशों, हमारी मान्यताओं, हमारी विचारधाराओं का प्रभाव आधुनिक समाज पर क्यों नहीं पड रहा है? जब स्वामी दयानन्द जी वैदिक धर्म की पताका लेकर निकले थे तब तो आज से कहीं अधिक अन्धकार का युग था। देश गुलाम था। रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, पाखण्डों, अशिक्षा और बुराईयों से हमारा समाज जर्जर हो चुका था। फिर भी स्वामी दयानन्द जी के उपदेशों से सारा राष्ट्र जागृत होकर अंगडाईयां लेने लगा था। मानवता फलित और पुष्पित होने लगी थी। अकेले महर्षि दयानन्द जी ने डंके की चोट पर समग्र विश्व की दानवता से टक्कर ली और उन्हें अपने महत्तम ऐतिहासिक कार्य में अभूतपूर्व सफलता मिली। उनकी सफलता का श्रेय उनकी कर्त्तव्य के प्रति अटूट भावना, निस्वार्थ भाव के साथ-साथ अपराजेय, त्याग और बलिदान की भावना थी। स्वामी जी ने मोमबत्ती की भांति अपने आपको जलाकर विश्व को ज्ञान का, सत्य का, धर्म का, मानवता का पावन प्रकाश दिया। प्रलोभन, अपमान, विष विपत्तियां उन्हें उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकी। प्रतिपल विश्व के कल्याण की कामना को लेकर उन्होंने अज्ञानान्धकार से, असत्य से, अधर्म से, दानवी वृत्तियों से, अन्याय से, अनाचार से जमकर संघर्ष किया और अपने उद्देश्यों में सफल होकर चैन की सांस ली। महर्षि दयानन्द जी अकेले रणक्षेत्र में लड़ते रहे विजयी होते रहे और सारे राष्ट्र में वैदिक धर्म की दुदुन्भि बजाई।

आईये इस शिवरात्रि के पावन पर्व पर हम सब लोग जो अपने आपको ऋषि दयानन्द जी सच्चा अनुयायी समझते हैं, इस बात पर विचार करें कि क्या हम सच्ची निष्ठा से, सच्चे हृदय से, सच्ची भावना से महर्षि के अधूरे कार्य को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। शिवरात्रि की इस जागरण वेला में हम इस बात का संकल्प लें कि हम अपने को आर्य कहलाने वाले, आर्य समाज से सम्बन्धित लोग महर्षि के पदचिन्हों पर चलकर संसार के उपकार के लिए अपना तन-मन और धन समर्पित कर देंगे। त्याग बलिदान का रास्ता अपनाकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में अपने प्राणों की आहुति देने से भी नहीं हिचकेंगे। हम पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, गुरूदत्त विद्यार्थी की तरह अपने लक्ष्य को पूर्ण करते हुए महर्षि दयानन्द के आदर्शों को अपने जीवन के अन्दर अपनाएंगे। शिवारात्रि संकल्प का पर्व है, जिस प्रकार बालक मूलशंकर इस दिन संकल्प करके सच्चे शिव को प्राप्त करके महर्षि दयानन्द सरस्वती बन गए थे उसी प्रकार हम भी शुभ संकल्प धारण करके आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें तभी हमारा बोधोत्सव पर्व का मनाना सार्थक हो सकता है। यही आज के युग की महत्ती आवश्यकता है।

thearyasamaj.org

शिवरात्रि पर आत्मबोध करें

❁ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर❁

स्वर्ण दिन शिवरात्रि का है, देश के इतिहास का।
मनुजता के शुभ पट पर , मानवता के सुविकास का

शिवरात्रि एक वैदिक संस्कृति का महापर्व है। इसे समस्त आर्य जगत् ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाता है क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बालक मूलशंकर के रूप में सुषुप्त भारतीय संस्कृति में नए रक्त का संचार किया था। बालक मूलशंकर ने सच्चे महादेव की उपासना का व्रत लेकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करने का निश्चय किया था। महादेव शब्द की व्याख्या करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि महत् शब्द पूर्वक देव शब्द से महादेव शब्द सिद्ध होता है। यो महत्तां देवः सः महादेवः जो महान् देवों का देव अर्थात् विद्वानों का विद्वान् सूर्यादि पदार्थों का प्रकाशक है, इसलिए उस परमात्मा का नाम महादेव है। कुछ लोग इस पर्व को शिव के साथ सम्बद्ध करते हैं। स्वामी दयानन्द जी महाराज इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं कि जो कल्याणस्वरूप और कल्याण करने हारा है। इसलिए उस परमात्मा का नाम शिव है। शिवरात्रि पर्व की मान्यता के आधार पर शिव व महादेव नामों को परमात्मा का गौणिक नाम माना जाता है। महर्षि ने इस विषय पर आत्माबोध करके ही यह परिभाषित किया था। वैदिक संस्कृति को इसी शिवरात्रि महापर्व से पुनः सम्मान दिलाने की शक्ति मिली थी। इसी शिवरात्रि के महान् पर्व से प्रेरणा लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य अर्थ को प्रकाशित कर वैदिक संस्कृति को सम्मान और गौरव दिलाया था। जिस समय महर्षि दयानन्द जी ने बोध प्राप्त करके देश के उत्थान का संकल्प लिया था उस समय देश विषम परिस्थितियों से जकड़ा हुआ था, अज्ञानान्धकार में लोग भटक रहे थे, हिन्दु समाज में अनेक कुरीतियां प्रचलित थी, वाममार्गियों ने हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों में भी प्रक्षेप कर दिया था। बाल विवाह की कुप्रथा प्रचलित थी, मूर्त्ति पूजा का पाखण्ड फैल रहा था। हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। समस्त हिन्दु जाति का कोई पथ प्रदर्शक नहीं था।

ऐसे ही समय में मूलशंकर ने घर से निकल कर काशी आदि अनेक स्थानों में संस्कृत विद्या का उपार्जन किया। शास्त्रों का मन्थन तथा वेदों का स्वाध्याय करते हुए मथुरा पहुंचे जहां प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी रहते थे जो व्याकरण के सूर्य समझे जाते थे। उनके चरणों में पहुंच कर आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया, हृदय की शंकाएं मिटाई और जब वहां से चलने लगे तो गुरूदेव ने कहा दयानन्द मुझे क्या देते हो, शिष्य के पास क्या था ? भिक्षा के लिए लौंग भेंट की तो उन्होंने दयानन्द जी से कहा कि दयानन्द संसार अविद्या से आच्छादित है, वेद विद्या का लोप हो गया है, लोग सत्य मार्ग से भटक गए हैं। तुम अपने ज्ञान चक्षु से देश का अन्धकार दूर करो, वेद विद्या का प्रचार करो लोगों को सन्मार्ग दिखाओ। यही मेरी दक्षिणा है। दयानन्द ने गुरू की आज्ञा शिरोधार्य कर गुरू का आशीर्वाद प्राप्त करके संसार के रणक्षेत्र में कूद पड़े। स्वामी दयानन्द जी ने संसारिक कुरीतियों तथा रूढिवादों के विरूद्ध आवाज उठाई,। इन सभी कुरीतियों, कुप्रथाओं, बुराईयों तथा रूढ़िवादों के विरुद्ध ऋषि को सफलता तो मिली किन्तु स्वार्थी लोगों ने ऋषि के पवित्र मन्तव्य को न समझ कर उनकी राह में अनेक बाधाएं उत्पन्न की परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए और सभी विरोधियों का डटकर मुकाबला किया।

परन्तु दुःख है कि जिन कुरीतियों को दूर करने के लिए महर्षि ने अपना बलिदान दिया, आर्य समाज की स्थापना की वही कुरीतियां तथा समस्याएं आज फिर उग्ररूप धारण करके हमारे सामने आ खड़ी हुई हैं। आज हमारा देश फिर अनेक प्रकार की बुराईयों से ग्रसित हो गया है। लोग फिर सन्मार्ग को भूलकर कुमार्ग पर चल रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी की बोध-धाराएँ

ले०—महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव तहसील सुन्दरनगर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमारे इतिहास में एक मात्र ऐसे महापुरूष है जिनकी चिन्तनधारा में हमें जीवन के समस्त पहलुओं पर सटीक और स्पष्ट निर्देश मिलते हैं। यही नहीं उनकी विचारधारा में जो सार्वभौमिकता और सार्वदेशिकता एवं सार्वकालिकता दिखाई देती है वह इस चिन्तनधारा को और भी अधिक उत्कृष्टता प्रदान करती है। उनके द्वारा प्रस्तुत विचारधारा इसलिए भी प्रमाणित और सार्थक है क्योंकि वह किसी साधारण व्यक्ति द्वारा अनुमोदित नहीं बल्कि उसका आधार आप्त पुरुष तथा परमात्मा का वेद ज्ञान है। उन्होंने अपनी विचारधारा इस प्रकार से विवेचित की है कि सार्वभौमिकता के साथ-साथ उसमें समसामयिकता और राष्ट्रीयता का समावेश बखूबी हुआ है। यही कारण है कि उनकी विचारधारा तत्कालीन परिस्थितियों में भारतीय जनजागरण के चंहुमुखी चेतनता का कारण बनीं। इस बात के प्रमाण अब मिल चुके हैं कि महर्षि दयानन्द जी का सहयोग अठाहर सौ सतावन के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन में रहा है। यह अलग बात है कि कुछ मूलभूत कारणों से उस समय सफलता नहीं मिल सकी मगर महर्षि के भीतर स्वतन्त्रता की आग निरन्तर प्रज्वलित रही तथा उन्होंने सबसे पहले उन कारणों को दूर करने का बीड़ा उठाया जिनके कारण वह आन्दोलन असफल रहा था। हमारा समाज उन दिनों अनेक प्रकार की कुरीतियों से बुरी तरह से जकड़ा हुआ था। जहां एक ओर बाल विवाह, सती प्रथा तथा महिलाओं को न पढ़ाने जैसी कुरीतियां थीं वहीं दूसरी ओर सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का नितान्त अभाव था। समाज मत-मजहब और ऊंच-नीच तथा क्षेत्रवाद की संकुचित काराओं में जकड़ा हुआ था। महर्षि जी ने इन समस्त कुरीतियों पर दृढ़ता के साथ कुठाराघात किया। उन्होंने पैरों की जूती कही जाने वाली तथा मात्र भोग की सामग्री समझी जाने वाली स्त्री जाति को एकदम गौरव का स्थान देते हुए मनु महाराज जी के शब्दों में उद्घोषणा की-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहां नारियों का सम्मान होता है वहीं पर देवता निर्मित होते हैं। बाल-विवाह और सतीप्रथा आदि को बन्द कराने के लिए उन्होंने ठोस प्रयास किए। उन्होंने जाति पाति और ऊंच-नीच के अभिशाप से जनमानस को मुक्त करने के लिए समानता और समरसता का मार्ग प्रस्तुत करते हुए कहा कि जन्म से कोई भी ऊंच-नीच नहीं होता बल्कि व्यक्ति के कर्म ही उसे श्रेष्ठ बनाते हैं। उन्होंने वर्ण और आश्रम व्यवस्था के न केवल सही अर्थ ही बताए बल्कि उनके सही कार्यान्वयन का मार्ग भी हमारे समक्ष रखा। इस माध्यम से उन्होंने समूचे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया तथा भारतीय जनता को अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर पूरे देश की स्वतन्त्रता की बात सोचने के लिए प्रेरित किया। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के बाद उनका यह प्रयास ठीक ऐसा ही था जैसे कोई बहुत बड़ी छलांग लगाने के लिए कुछ दूरी के लिए पीछे हटता है। महर्षि जी का प्रयास सफल हुआ तथा लोगों के भीतर एक नई उमंग, जोश और साहस तथा सामूहिक देशभक्ति के भावों का सृजन हुआ। इतिहास इस बात का गवाह है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्रीय जागरण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कांग्रेज का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि स्वंतन्त्रता संग्राम में अस्सी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजियों ने अपना योगदान दिया है। यही नहीं एक आकलन के अनुसार स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर कुल उन्नतीस सौ लोगों ने फांसी को चूमा है जिनमें से अठाईस सौ आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हैं। केवल इतना ही नहीं बल्कि स्वतन्त्रता की इस लड़ाई में भाग लेने वाले अन्य लगभग समस्त नेताओं पर भी किसी न किसी प्रकार महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज की ही प्रेरणा रही है। महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में सबसे पहले स्वदेश और स्वतन्त्रता की बात

thearyasamaj.org

कही है। बाल गगांधर तिलक जी का कथन है कि 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' यह प्रेरणा मुझे महर्षि दयानन्द जी से ही मिली है। लाला लाजपत राय, सरदार भगतसिंह, किशन सिंह, अजीत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल एवं उनके शिष्य अशफाकउल्ला खां, रोशनसिंह, भाई परमानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारियों का प्रेरणा स्त्रोत आर्य समाज ही रहा है। केवल इतना ही नहीं बल्कि विदेश में इण्डिया हाउस की स्थापना करने वाले श्यामजी कृष्ण वर्मा न केवल महर्षि जी के अनन्य भक्त थे बल्कि विधिवत उनका पत्रव्यवहार महर्षि जी के साथ रहा है। यही जाकर सावरकर, मदन लाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि ने क्रान्ति की गतिविधियों को आगे बढ़ाया।

महर्षि दयानन्द जी ने एकता का आधार वेद हमारे सामने रखा। उनका यह कथन सत्य और व्यवहारिक ही नहीं बल्कि अत्यधिक सार्थक है कि किसी भी मानव द्वारा बनाया गया ग्रन्थ या मत पूर्णतः सत्य एवं अन्तिम नहीं हो सकता है। उन्होंने सटीक प्रमाणों से यह बात हमारे सामने रखी कि वेद ज्ञान परमात्मा के द्वारा दिया गया निर्भ्रान्त एवं सृष्टि नियमानुकूल सार्वभौमिक ज्ञान है तथा यही मानव मात्र के लिए अन्तिम सत्य एवं निर्भ्रान्त धर्म है। उनसे पूर्व आम जनता की बात तो क्या कहें, भारतीय तथा पाश्चात्य मनीषियों के लिए भी वेद मात्र कर्मकाण्ड का ग्रन्थ था। यही नहीं उनसे पूर्व वेद के भाष्य इस प्रकार किए गए कि वे मानव मात्र से बहुत दूर होते चले गए। वेदों पर लौकिक इतिहास, अश्लीलता, जादू टोने आदि के आरोप लगाए गए तथा उन्हें गड़रियों के गीत तक कहा गया। महर्षि दयानन्द जी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ही नहीं कहा बल्कि उसे मानव मात्र के लिए अत्यन्त व्यवहारिक और अनुकरणीय बताया। उन्होंने वेद का भाष्य करके यह भी सिद्ध कर दिया कि वेद में अपार ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है। उनके वेद भाष्य की अनेक विशेषताएं हैं मगर मुख्य बात यह है कि उन्होंने वेद के आध्यात्मिक स्वरूप को ही हमारे सामने नहीं रखा बल्कि उसका व्यवहारिक पक्ष भी हमारे सामने रखा। इस सम्बन्ध में योगीराज अरविन्द घोष ने कहा है कि वेद का अन्तिम सत्य चाहे कुछ भी हो मगर महर्षि दयानन्द जी ऐसे प्रथम महापुरुष थे जिनके पास वेद के रहस्यों को खोलने की असली कुंजी थी। इस वेद बोध को स्वयं प्राप्त करके उन्होंने समाज के लिए बोध के अनेकानेक मार्ग प्रशस्त किए। वेद बोध के माध्यम से उन्होंने मानव बोध और धर्म बोध को हमारे सामने प्रस्तुत किया।

वेद द्वारा अनुमोदित उन्होंने जिस धर्म को पुनः हमारे समक्ष रखा वह क्षेत्रवाद और मत-मजहब वाद से ऊपर उठकर मानवतावाद और वसुधैव कुटुम्बकम का आदर्श रखने वाला है। वे ऐसे महामानव थे जिन्होंने सर्वप्रथम धर्म को व्यवहार के साथ जोड़ा। उनसे पहले धर्म केवल बाहरी दिखावा मात्र था मगर उन्होंने मनु महाराज जी के शब्दों में शब्द मिलाते हुए कहा-न लिंगम् धर्मकारणम्। अर्थात बाहर के चिन्ह या दिखावा आदि धर्म नहीं है बल्कि धर्म तो आपसी व्यवहार का नाम है जिससे परिवार, समाज और देश उन्नति के साथ पर अग्रसर हो सके। उन्होंने उन्हीं मानव परक दस नियमों को हमारे सामने रखा जिसका वर्णन मनु जी ने किया है। वे दस लक्षण हैं-धैर्य, क्षमा, दम, चोरी न करना, इन्द्रिय निग्रह, पवित्रता बुद्धि, विद्या, अक्रोध और सत्यवादी होना। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनके द्वारा निर्देशित धर्म में दिखावा नहीं बल्कि आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनने की प्रक्रिया है। वे हमें वेद के उस युग तक लौटाना चाहते थे जहां मत-मजहब, जात-पात और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर व्यक्ति मानवता के उच्च आदर्श का स्पर्श करके अपनी चतुर्दिक उन्नति के साथ-साथ प्रत्येक की उन्नति में अपनी उन्नति समझकर एक आदर्श प्रस्तुत कर सके। उनके द्वारा दिखाया गया वैदिक धर्म हमें पुरूषार्थ की प्रेरणा देता है, भाग्य के भरोसे बैठे रहने का परामर्श नहीं। उन्होंने कर्म की और निरन्तर कर्म करने की ही प्रेरणा दी है क्योंकि यही एक मात्र पूंजी हमारे पास है। परमात्मा वास्तव में ही उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करता है। इसलिए उन्होंने सब प्रकार के पाखण्डों से उबारकर हमें परिश्रम करने के लिए ही प्रेरित किया है। उनका कथन है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र मगर फल भोगने में परतन्त्र है। ठीक यही बात गीता में भी अलग ढंग से कहीं गई है कि हमारा अधिकार कर्म करने तक ही सीमित है उसके फल तक नहीं। फल तो हमारे कर्मों के अनुसार परमात्मा स्वयं देंगें ही। उन्होंने लोगों के मन से इस भ्रम को भी निकाला है कि हमें बुरे कर्मों की माफी मिल सकती है। उन्होंने इसका सटीक तर्क दिया कि

thearyasamaj.org

क्योंकि परमात्मा न्यायकारी है इसलिए वह कभी भी किसी के साथ किसी प्रकार की रियायत नहीं कर सकता है बल्कि वह उसी प्रकार का फल देगा जैसा हमने कर्म किया होगा। बड़ी हैरानी की बात है कि व्यक्ति बुरे कर्म तो करता है मगर उसके फल से बचना चाहता है। इस बचाव के कारण ही धर्म में पाखण्ड और आडम्बर आ घुसता है। बुरे कर्म के फल को ही पाप कहा गया है मगर व्यक्ति बुरे काम तो छोड़ना नहीं चाहता है और उसके फल से बचने के लिए वह कभी किसी नदी विशेष में नहाकर, कभी किसी विशेष पैगम्बर या गुरू के पास जाकर या किसी प्रकार का दान आदि देकर बचना चाहता है। बस इसे ही उन्होंने पाखण्ड और आडम्बर कहा है क्योंकि इसी माफी के कारण व्यक्ति बार-बार पाप करने की हिम्मत करता है। जब उसे मालूम ही है कि उसके किए हुए बुरे कर्मों को क्षमा कर दिया जाऐगा तो भला वह पाप क्यों नहीं करेगा? महर्षि दयानन्द जी ने दुनियां का बहुत बड़ा उपकार किया जो उन्होंने इस प्रकार की माफी को वेद विरुद्ध तथा परमात्मा की न्याय व्यवस्था के विरुद्ध माना है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है तथा इसका अपने ग्रन्थों में विधिवत् विशद विवेचन किया है। उनकी नज़र में केवल पुस्तकों का रटा देना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि व्यक्ति को नैतिकता के साथ जोड़ना ही शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। एकाकी शिक्षा के वे पक्षधर नहीं थे बल्कि वे चाहते थे कि शिक्षा से व्यक्ति के व्यक्तित्व का चतुर्दिक विकास होना चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा के लिए उन्होंने माता को सबसे प्रथम गुरू माना है तथा उसके बाद ही पिता और आचार्य की बारी आती है। उन्होंने इस बात का निर्देश भी अपने ग्रन्थों में दिया है कि पढ़ाने वाले अध्यापक उच्च चरित्र के तथा अपने विषय में पारंगत होने चाहिए। यही नहीं उन्होंने इस प्रकार की चहुंमुखी गतिशीलता प्रदान करने वाली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम भी निर्धारित किया है। व्यक्ति को सही मानव कैसे बनाया जा सकता है इसका व्यवहारिक पक्ष उन्होंने अपने ग्रन्थ 'संस्कार विधि' में हमारे समक्ष रखा है। वहां उन्होंने सोलह संस्कारों का विशद विवेचन किया है। इन संस्कारों को अपने जीवन में अपनाने से ही हम सार्वभौमिक संस्कृति का सवंर्धन और सरक्षंण कर सकते हैं। शिक्षा बोध के साथ-साथ उन्होंने अर्थबोध और विज्ञानबोध के बारे में भी अपने विचार वेदों के आधार पर प्रस्तुत किए हैं। उनका यह मानना था कि मूल रूप में विज्ञान की प्रत्येक बात हमारे वेदों में ही निहित है बस ज़रूरत है तो उसके परीक्षण आदि की। इसके साथ ही साहित्य और भाषा विज्ञान के बारे में भी उन्होंने अपने ग्रन्थों में प्रकाश डाला है। उन्होंने खड़ी बोली के युग में भाषा के सवंर्धन के लिए साहित्य की रचना ही नहीं की बल्कि उन्होंने इस बात की भी घोषणा की कि सारे देश को जोड़ने वाली भाषा केवल और केवल मात्र हिन्दी ही हो सकती है।

महर्षि दयानन्द जी ने प्रत्येक व्यक्ति को आत्मबोध की ओर प्रेरित करते हुए आदेश दिया है कि परमात्मा की प्रतीति कठिन नहीं मगर इसके लिए हमें पहले स्वयं अपने आप को पहचानना पड़ेगा। अपनी पहचान किए बिना हम परमात्मा को नहीं पा सकते हैं क्योंकि जब तक हमारा जीवन केवल शारीरिक स्तर तक ही सीमित रहेगा तब तक सांसारिक भोग ही हमारा लक्ष्य बने रहेंगे। जिस दिन हम आत्मा के स्तर पर जीना आरंभ करेंगे उसी दिन से हमारी ज़रूरतें बदल जाएंगी। फिर ये भौतिक पदार्थ और वासनाएं हमें अपने मार्ग से डिगा नहीं सकेंगी। अपनी वास्तविक पहचान होने पर ही हमें अपने अन्तिम लक्ष्य की प्रतीति भी हो सकेगी। जीवात्मा का लक्ष्य है परमात्मा की प्रतीति क्योंकि उसी में आनन्द और चिर शान्ति निहित है तथा भटकाव का अन्त है। उन्होंने वेद के आधार पर ही कहा कि शरीर तो समाप्त होने वाला ही है। इसकी नियति ही समाप्त होना है मगर शरीर के समाप्त होने के साथ जीवात्मा का अस्तित्व फिर भी शेष रहना है। जीवात्मा न कभी जन्म लेता है और न ही कभी मरता है। उन्होंने तीन सत्ताओं को अनादि माना है-प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा। उनका यह त्रैतवाद वेद अर्थात परमात्मा के ज्ञान पर आधारित है। उनका मानना है कि अविवेक के कारण ही हम जन्म-मरण के बन्धन में पड़े हुए है जिस दिन हमें विवेक होगा तथा अपने आप से पहचान होगी उसी दिन मुक्ति मिल सकेगी अर्थात समस्त दुःखों से छुटकारा मिल सकेगा। यह प्राप्ति स्वत: मिलने वाली नहीं बल्कि इसके लिए हमें निरन्तर प्रयास करना होगा। परमात्मा की प्राप्ति को उन्होंने व्यक्ति का अन्तिम लक्ष्य बताया है। उनके अनुसार वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक तो है मगर वेद का मुख्य विषय उन्होंने परमात्मा

thearyasamaj.org

ही बताया है। एक बार लाला जगन्नाथ जी ने उनसे पूछा कि जीवन का लक्ष्य क्या है तो उनका साफ उत्तर था-ईश्वर प्राप्ति।

महर्षि दयानन्द जी की यह बोधयात्रा कब से प्रारंभ हुई इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता है मगर जब उन्होंने बचपन में शिवरात्रि का व्रत रखा और शिव की मूर्ति पर चूहों को उछल-कूद करते देखा तो उनकी पारंपरिक आस्था को धक्का लगा। उन्हें बोध हुआ कि वह सच्चा शिव नहीं हो सकता है। उसी समय उनके हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की इच्छा प्रबल हुई। उनकी इस भावना में अग्नि में घी जैसा काम किया प्यारी बहिन और चाचा की मृत्यु ने। बस चूहे वाली घटना तथा बहिन और चाचा की मृत्यु की घटना ने उन्हें पूर्णरूप से वैरागी बना दिया और उन्होंने मन ही मन दो प्रतिज्ञाएं कर ली। पहली सच्चे शिव को प्राप्त करने की और दूसरे मृत्युंजयी बनने की। अन्ततः उन्होंने इन उपलब्धियों को आत्मसात् किया और उनका यह बोध सारे संसार के लिए बहुआयामी बोध सिद्ध हुआ। वे आप्त पुरुष बनें और हमें बताया कि परमात्मा एक है तथा वह कण-कण में विराजमान है। हमें उसकी प्रीति इसलिए नहीं होती क्योंकि हम अपने भीतर आत्मा रूपी आंख पैदा नहीं कर पाते हैं जिसके द्वारा उसकी प्रतीति संभव है। उन्होंने परमात्मा के अनेक नामों की व्याख्या की मगर उन्होंने घोषित किया कि उसका निज नाम 'ओम्' है। महर्षि दयानन्द जी की विशेषता यह भी है कि उन्होंने हमें केवल परलोक को संवारने की बात ही नहीं की बल्कि उन्होंने इस लोक और परलोक दोनों को संवारने की बात कही। उन्होंने बार-बार अपने ग्रन्थों और प्रवचनों में व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त करने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त करने की बात कही है। इसीलिए हम उनके चिन्तन में बहुआयामी बोध को देखते हैं। उन्होंने समाजबोध, मानवबोध, राष्ट्रबोध, वेदबोध, कर्मबोध, धर्मबोध, शिक्षाबोध, साहित्यबोध, भाषाबोध, अर्थबोध, विज्ञानबोध के साथ-साथ हमें आत्म और परमात्मबोध के बहुआयामी बोधों से परिचित कराया है। आज उनके बोधोत्सव पर यदि हममें ये बोध आत्मसात् हो जाएं तो पता नहीं इनसे भविष्य में और कितने बोधों से हमारा साक्षात् हो सकेगा और इस प्रकार हम भी जहां अपने जीवन को धन्य बना सकेंगे वहीं समूचे विश्व में इस बोध से सुख-शान्ति का सृजन कर सकते हैं।

पृष्ठ 7 का शेष- शिवरात्रि पर.....

भ्रष्टाचार हमारे देश में बढ़ता जा रहा है, बलात्कार की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं, पैसों के लिए भाई-भाई की हत्या कर रहा है, सदाचार कहीं दिखाई नहीं दे रहा है, चारों ओर पापाचार और अनाचार फैल रहा है।

महर्षि दयानन्द के समय में देश की जो शोचनीय तथा भंयकर दशा थी वर्तमान में भी वही स्थिति है। इसलिए आज फिर हमें आत्मबोध करने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द से पहले तथा उनके बाद कितनी ही शिवरात्रियां आई, न जाने कब से लोग शिवरात्रि के दिन उपवास करके बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा से जागरण करते हैं परन्तु आज तक किसी को बोध नहीं हुआ। किसी को सच्चे शिव के दर्शन नहीं हुए। क्योंकि वेद में कहा गया है कि यो जागारः तमृचाः कामयन्ते अर्थात् बोध उसी को होता है जो जागता है, संसार में स्तुति का पात्र वही बनता है। मूलशंकर ने रात भर जाग कर निद्रा देवी के साथ युद्ध करके आलस्य और प्रमाद को दूर भगाकर निरन्तर जागते रहने और एकनिष्ठ होकर जिस सच्चे शिव को प्राप्त करने का परिचय दिया वह अपने आप में अद्वितीय है। जो जागरूक रहता है जिसके अन्दर ज्ञान प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा होती है उसे ही बोध होता है। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने बोध प्राप्त करके सारे संसार का कल्याण किया धा, लोगों को सत्य का ज्ञान कराया था, वेद का पठन-पाठन पुनः प्रारम्भ किया था। आज फिर महर्षि दयानन्द की तरह बोध प्राप्त करने की आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द ने जो पथ प्रशस्त किया है उस पथ पर चलकर ही समाज में जागृति आ सकती है। शिवरात्रि का भी यही मुख्य सन्देश है कि सच्चा दृढ़ व्रती बनना। जीवन भर जागते रहना अर्थात् सत्यासत्य का विवेक प्राप्त करना और सत्य का ग्रहण करना तथा असत्य का हमेशा परित्याग करना। शिवरात्रि का पर्व तो हर वर्ष आता रहेगा परन्तु अगर इस पर्व से शिक्षा लेकर हम भी बोध प्राप्त करते हैं तो हमारा इसे बोधोत्सव के रूप में मनाना सार्थक होता है। इस शिवरात्रि पर हम भी मूलशंकर की तरह सच्चे व्रती बन कर स्वयं ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करें और अन्यों को करावें ताकि एक ईश्वर को मानने वाले हम संगठन के सच्चे सूत्र में बन्ध कर एक दूसरे के सहयोगी बनें और अपना कल्याण कर सकें।

thearyasamaj.org

यजुर्वेद में शिव (रुद्र) का स्वरूप और कार्य

लेo— डॉo भवानीलाल भारतीय 315 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

वैदिक धर्म में एक परमात्मा को इन्द्र, मित्र, वरूण, सुपर्ण, अग्नि, यम तथा मातरिश्वन आदि नामों से पुकारा गया है। इसका प्रमाण ऋग्वेद (1/164/46) में मिलता है जहां कहा गया है कि एक ही सत्य (ईश्वर) को विप्र अर्थात् बुद्धिमान, पुरूष विभिन्न नामों से पुकारते हैं। कालान्तर में हिन्दू धर्म में तीन देवों को प्रधान मान कर ब्रह्मा शिव तथा विष्णु की उपासना का प्रचलन हुआ। सृष्टि के उत्पत्ति कर्त्ता ब्रह्मा प्रायः उपेक्षित ही रहे। यजुर्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्म के पद पर प्रतिष्ठित करने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है-स्त्री हि ब्रह्म वभूविथ।

विष्णु को संसार का पालन कर्ता बताया जाता है। यद्यपि व्युत्पत्ति की दृष्टि से सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु' शब्द की सिद्धि होती है। वेदों में विष्णु वाचक मंत्र थोड़े हैं। कालान्तर में जब वैष्णव मत का प्रचार हुआ तो यह भारत का प्रधान उपासक सम्प्रदाय बना। यजुर्वेद अध्ययन 16 का मुख्य देवता (प्रतिपाद्य विषय) रूद्र है जो भगवान शंकर की संहार शक्ति का द्योतक है। तथापि यजुर्वेद के उस प्रकरण में वर्णित रूद्र के स्वरूप एवं क्रिया कलाप को देखें तो यहां 'रूद्र' शासक राजा तथा सेनापति की भूमिका में आये देवता का वाचक है। तथापि रूद्र को शिव, शम्भु, मयोभव (सुख प्रदायक), शिवता आदि वाचक शब्दों का प्रयोग उस मंत्र को परमाराध्य परमात्मा को किया गया नमस्कार का सूचक यह मंत्र है-नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरायच 11 (16/41)

उस सोलहवें अध्याय में वर्णित रूद्र के राजा तथा सेनापति सूचक अर्थो के अतिरिक्त जब हम रूद्र को सृष्टि से संहारकर्ता रूप में स्मरण करते हैं। तो रूद्र के व्युत्पत्ति जन्म अर्थ की ओर हमारा ध्यान जाता है जहां दुष्टों का दमन करने वाले, उन्हें रुलाने वाले परमात्मा की रूद्र संज्ञा बताई गई है। 66 मंत्रों वाले इस सोलहवें बलशाली को आराम में रूद्र रूपी सेनापति या राजा के मन्यु (क्रोध) को स्मरण किया गया है जो दुष्टों को दण्ड देने की क्षमता रखता है, साथ ही उसके तीक्ष्ण बाणों तथा बलशाली भुजाओं का भी आदरपूर्वक स्मरण करता है। उस रूद्र को 'नीलग्रीव' कहा गया है। कालान्तर में जब शिव के विषपान की कथा प्रचलित हुई तो उनके कण्ठ में विद्यमान नीलिमा उसी विषपान की सूचक बनी। यह रूद्र आठवें मंत्र में 'सहस्राक्षाय' हजार आंखों वाला अथवा सर्वत्र फैले चार चक्षुओं (जासूसों) वाला कहा गया है जो अपनी सतर्कता तथा सावधानी के कारण सम्पूर्ण राज्य पर नज़र रखता है। दसवें मंत्र में रूद्र के लिए 'कर्यर्दी' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो उसके जटाजूट का वाचक है शिव की अधिकांश मूर्तियों में उनकी जटाओं तथा मस्तक पर चन्द्रमा एवं गंगा की उपस्थिति दिखाई जाती है। 15वां मंत्र में रूद्र परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे माता पिता, बालकों आदि की रक्षा करे।

उस अध्याय के सत्रहवें मंत्र से अन्तिम 66वें मंत्र तक रूद्र के रूप में उस सर्वत्र व्याप्त, सृष्टि के कण कण में विद्यमान, चराचर जीव जगत में अपनी सत्ता रखने वाले रूद्र के लिए नमस्कार का प्रयोग किया गया है। यहां 'नमः' शब्द अनेकार्थ वाची है। यह नमस्कार सूचक तो है ही, साथ दुष्टों के दमन, क्षुद्र प्राणियों को उनका भोज्य पदार्थ अन्नादि देने तथा दुष्टों को दण्ड देने का सूचक भी है। वस्तुतः उन मंत्रों का अभिप्राय यह बताना है कि रूद्र रूप में परमात्मा निखिल ब्रह्मा सर्वत्र विद्यमान है। रूद्र और शिव के वाचक उन यजुर्मन्त्रों का संग्रह रूद्राध्याय या रूद्री नाम से शैव मंदिरों में सस्वर पढ़ा जाता है।

thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द–सच्चे वैज्ञानिक

ले०—श्री डा. एच. कुमार कौल डायरैक्टर गांधी आर्य सी० सै० स्कूल, बरनाला

अरविन्द घोष ने महान योगी स्वामी दयानन्द जी के विषय में कहा था–"जितने महापुरुषों का आविर्भाव हुआ था। उन सबमें महर्षि स्वामी दयानन्द जी का व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व, देश धर्म, सेवा, वेदोद्धार आदि अपनी महिमा से अपना अलग स्थान रखते है। सभी महापुरुष पर्वत शिखरों की भांति अपनी छटा, अपनी आभा अपनी सुन्दरता अलग-अलग रूपों में प्रकट करते हैं। सभी एक दूसरे से भिन्न मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते है। किन्तु इन सभी अलग श्रृंगों में सबसे उन्नत, गौरीशंकर के समान अप्रतिम, उद्धत, अपूर्व महर्षि दयानन्द ही बहुपक्षीय व्यक्तित्व है। निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उदीप्त तपस्या से कुन्दन स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन।" स्वामी जी के बारे में कहा जा सकता है

जिन्हें हर हाल में संसार का उपकार करना था,
जिन्हें वैदिक धर्म का विस्तार करना था।
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था;
जिन्हें इस देश और जाति का बेड़ा पार करना था।

रही बात उनके वैज्ञानिक होने की तो, संसार के अन्य मन-मनान्तर भले ही खरे न उतरे, परन्तु केवल मात्र वैदिक धर्म ही ऐसा है, जो पूर्णत: विज्ञान सम्मत है। वैदिक धर्म का इतिहास इस दृष्टि से इतना गौरवमय है कि सब मत-मतान्तर उससे शिक्षा ग्रहण कर सकते है। वैदिक धर्म में ज्ञान रूपी वृक्ष का फल खाना, पाप नहीं, पुण्य समझा जाता है। स्वामी जी ने तो यहाँ तक कहा है-"बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं हो सकती।" अन्य धर्मों में यहां विज्ञान और वैज्ञानिकों का विरोध हुआ है। गैलीलियों को जेल में डाला गया। ब्रूनों को जिन्दा जलाया गया। इस्लाम के अनुयायियों ने अपनी धर्मान्धिता में ज्ञान-विज्ञान के विरोध स्वरूप बड़े-बड़े पुस्तकालय अग्नि में भेंट कर दिये वही वैदिक धर्म इतना वैज्ञानिक, गौरवमयी है, कि अन्य मत-मतान्तर उनसे शिक्षा ग्रहण कर सकते है।

स्वामी दयानन्द जी को महान वैज्ञानिक के रूप में परिभाषित करने से पहले ये जानना आवश्यक है, कि विज्ञान क्या है ? विज्ञान रो भाव है-विशेष ज्ञान। विज्ञान ऐसे विषय का क्रमागत अध्ययन है, जो कारण और परिणाम में सम्बन्ध स्थापित करता है। जिसके नियम अटल और निश्चित है। जो सत्यता की कसौटी पर खरा उतरता है जो हमें बताता है कि वास्तविकता क्या है ?

स्वामी दयानन्द जी ने अपना सारा जीवन सत्य की खोज और सत्य की कसौटी पर जो खरा उतरा उसे बिना किसी संकोच, बिना किसी हिच-किचाहट के कह दिया। ये बात अलग है, कि उनके जो वैज्ञानिक नियम है वह किसी प्रयोगशाला में नहीं किये गये। न ही वह सांइस की डिग्री पाने वाले वैज्ञानिक थे। वह तो सत्य की खोज करने वाला, निर्भीक, निडर वैज्ञानिक था।

वास्तव में वह एक महान, सच्चे वैज्ञानिक थे, क्योंकि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य की खोज में बिता दिया। सारा दिन भूखे रहकर शिवरात्रि का व्रत रखा। रात में बाल मूलशंकर ने देखा कि जो भोग शिवजी को चढ़ाया गया था। चूहा आया, मूर्ति पर चढ़ा और लड्डुओं को खाने लगा। मूलशंकर ने देखा-कि शिव जी की मूर्ति उसे रोक नहीं सकी उनके मन में प्रश्न उठा कि जो मूर्ति अपनी रक्षा नहीं कर सकती। वह किसी और की क्या करेगी और इस सत्यता ने उनके जीवन की दिशा बदल दी वह मूलशंकर से स्वामी दयानन्द बन गये। सत्य वह है जो सच्चाई की कसौटी पर खरा उतरे। सत्य क्या है ? यह उनके जीवन का लक्ष्य बन गया इसलिए जब उन्होंने सन्यास लिया और 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है-कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन है-'सत्य का ज्ञान' सत्य का अर्थ है-'प्रकाश करना।' अर्थात् जो सत्य है, जो जैसा है उसे वैसे ही स्वीकार करना। ये उनके वैज्ञानिक होने का मुख्य प्रमाण है।

सत्य की प्रतिष्ठा के लिए, जो सुकरात को सहना पड़ा, जो गैलीलियो पर गुजरा। वही स्वामी जी को भी बर्दाशत करना पड़ा। उन्होंने हर कुरीति, हर पाखण्ड का डटकर विरोध किया। जिस प्रकार जहर का प्याला सुकरात को पीना पड़ा गैलीलियों को जेल में डाल दिया गया। वैसे ही सत्य कहने पर स्वामी जी को एक बार नहीं, अनेक बार जहर का प्याला पीना पड़ा। अन्त में उन्हें शीशा पीसकर पिला दिया गया, जिससे वह चिरनिद्रा में लीन हो गये। स्वामी जी का क्या अपराध था ? यही की आर्यवर्त देश में उत्पन्न होने पर भी देश की मतमतान्तरों की बातों का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश किया। विज्ञान से दयानन्द जी का तात्पर्य ज्ञान की उस प्रणाली से है जिसमें ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों का समुचित उपयोग हो। (शेष पृष्ठ 21 पर)

thearyasamaj.org

समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०—श्री अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैंट, कौशाम्बी

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने समय के एक विलक्षण समाज सुधारक थे। संसार के महापुरूषों के जीवनों का अवलोकन करने से पता चलता है कि वह सब सामयिक परिस्थितियों से प्रभावित थे तथा इन के कारण उन्होंने समझौते किये किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती एक ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने कभी अपने मन्तव्यों और सिद्धान्तों के लिए कोई भी परिस्थिति आने पर भी समझौता नहीं किया। उन्होंने कभी ऐसे समझौते की गुंजाइश ही नहीं छोड़ी।

इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अपने विचारों और धर्म को सदा अलग ही रहने दिया, इन का मिश्रण नहीं होने दिया। इसके साथ ही अन्य गुरुओं की भान्ति गुरु, पैगम्बर या पीर बनाने का यत्न भी नहीं किया। जिन मान्यताओं को ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त माना गया, उन मान्यताओं को ही आपने भी अपनाया। इस त्याग भावना ने ही उन्हें महर्षित्व प्रदान किया।

स्वामी जी ने कभी अपने को उच्च दिखाने का प्रयास नहीं किया किन्तु स्वलिखित जीवन के माध्यम से अपना जो अल्प सा परिचय दिया उस में बताया कि ''मेरा जन्म मछकांटा नदी के किनारे मोरवी राज्य के एक कस्बे में औदिच्य ब्राह्मण कुल में संवत १८८१ में हुआ था। मेरे पिता की पुष्कल भूमीहारी थी। उनको मोरवी राज्य से अधिकार मिले थे। वे अच्छे सताधारी थे और प्रबन्ध स्थिर रखने के लिए कुछ सैनिक भी रखते थे। पण्डित लेखराम जी ने भी काठियावाड़ के मोरवी को ही ऋषि का जन्म स्थान माना है तो देवेन्द्र मुखोपाध्याय ने मोरवी के टंकारा गांव को स्वामी जी का जन्म स्थान माना है। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसकजी ने ''ऋषि दयानन्द के पिता का नाम कर्सन जी ही लिखा है और जन्म स्थान भी टंकारा का जीवापुर मुहल्ला वर्णित किया है।''

ऐसे बालक का नाम मूल शंकर रखा गया और मूल जी के नाम से बुलाया जाने लगा। उन्हें समय आने पर देवनागरी शब्दों का ज्ञान कराना आरम्भ किया गया। आठवें वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तथा शिवभक्त बना कर चौदह वर्ष की आयु में शिव पूजन व जगराता के लिए शिव रात्रि के व्रत के लिए माता के विरोध की चिन्ता किये बिना ले जाया गया। रात्रि के दूसरे पहर तक जब पिता सहित सब भक्त सो गये तो कुछ चूहे वहां उछल कूद करने लगे व प्रसाद गन्दा करने लगे तो मूल जी को अनुभव हुआ कि चूहे से अपनी रक्षा न कर पाने वाला यह शिव भगवान नहीं हो सकता और वह उठ कर घर चले गये तथा भोजन खा कर व्रत त्याग दिया।

अभी बालक अन्धविश्वास से दूर हो सच्चे शिव की खोज में जुटा था कि उसकी छोटी बहिन की मृत्यु हो गई। इस बात से उन्हें बहुत दुःख हुआ। इससे मन वैराग्य की ओर बढ़ गया, इस मध्य ही उन के प्रिय चाचा की मृत्यु हो गयी। अठारह वर्षीय मूल जी मृत्यु से छुटकारे का मार्ग ढूंढने लगा किन्तु उन्हें कोई मार्ग न मिला। माता पिता ने बालक की अवस्था देख कर उसके विवाह का निर्णय किया। किन्तु विवाह होता इससे पूर्व ही आप घर त्याग कर चल दिये, पकड़े भी गये किन्तु फिर ऐसा भागे कि हाथ न आये। वह साधु लोगों के द्वारा लुटते रहे, उनका नाम शुद्ध चैतन्य रख दिया किन्तु संन्यास देने को कोई आगे न आया। अन्त में स्वामी पूर्णानन्द जी ने उनका परीक्षण करने के पश्चात एक दक्षिणी ब्राह्मण से संन्यास दीक्षा दिलवा कर दयानन्द नाम दिया। अब स्वामी जी गुरू विरजानन्द के दर्शनार्थ चल पड़े और १९१६ सम्वत में मथुरा पहुंचे। यहां रहते हुए स्वामी जी ने व्याकरण तथा आर्ष ग्रन्थों को पढ़ा। इस समय तक स्वामी जी की आयु ३५ वर्ष हो गई थी।

दण्डी गुरू की कुटिया छोड़ते समय गुरू दक्षिणा का समय आया। स्वामी जी ने लौंग प्रस्तुत किये तो गुरू जी ने कहा कि ''इस परम पुनीत जगतगुरू भारत की ओर दृष्टि उठाओ। जो समस्त संसार का गुरू था। आज वह विद्या विहीन होकर ईश्वरीय ज्ञान वेद के नाम तक को भी भूल चुका है-----

thearyasamaj.org

अतः वेद के सूर्य का प्रकाश करके मनुष्य मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करो। मिथ्या विश्वासों को दूर करो।"

गुरू से आशीर्वाद लेकर वैशाख सम्वत १९२७ तदनुसार अप्रैल १८६३ को मथुरा से चलकर आगरा में सेठ गुल्लामल जी के बाग में ठहरे। आपके प्रभाव से यहां कुछ लोगों ने मूर्तिपूजा को त्याग दिया। यहां से आप ने देश भ्रमण करते हुए देश की अवस्था का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया तथा वेद की खोज में १८६५ ईस्वी में धौलपुर फिर वहां से माघ वदी १२ सं १९२१ में ग्वालियर गये जहां राजा के सन्देश वाहकों को बताया की भागवत महात्म्य का फल कष्ट क्लेश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। १२ मार्च १८६७ में हरिद्वार के भीम गोडा में पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरा कर यहां से अनेक व्याख्यान दिये व शास्त्रार्थ किये। इस मध्य स्वामी जी जहां भी गये, वहां उनके व्याख्यान होते रहे। अनेक स्थानों पर स्वामी जी को मारने का प्रयास किया गया किन्तु सफलता नहीं मिली। इस प्रकार देश की अवस्था का अवलोकन कर स्वामी जी कार्य क्षेत्र में उतरे।

सर्वत्र स्वामी जी अन्ध विश्वासों, रूढ़ियों, कुरीतियों के विरोध में व्याख्यान देते। जिससे उनके भक्तों के साथ ही साथ विरोधियों की संख्या भी बढ़ती गई। अनेक बार बम्बई गए किन्तु तीसरी बार जाने पर लोगों ने सत्संग संस्था स्थापित करने की इच्छा प्रकट की। लोगों की इच्छानुसार सत्संग सभा की स्थापना की गई और इस का नाम आर्य समाज रखा गया। इसकी स्थापना सन १८७५ ईस्वी में नए सम्वत के दिन बम्बई के काकडबाडी नामक स्थान पर की गई। आरम्भ में इस सभा के पच्चीस सदस्य बनाये गये। इससे पूर्व सत्यार्थ प्रकाश भी प्रकाशनार्थ दिया जा चुका था।

स्वामी जी के मुख्य कार्य : स्वामी जी ने देशाटन कर जिन रूढ़ियों, कुरीतियों तथा अन्ध विश्वासों की खोज की थी, जो जो सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रिय कमियां स्वामी जी को दिखाई दीं, स्वामी जी ने उन्हें दूर करने का जोरदार अभियान चलाया तथा यह आर्य समाज भी इस अभियान का मुख्य अंग बन गया। इस प्रकार समाज के सुधार, जाति के उत्थान व देश के उत्थान के लिए स्वामी जी ने अनेक कार्य किए। यथा:

वेदों की ओर लौटो : स्वामी जी ने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह ज्ञान परम पिता ने सृष्टि के आरम्भ में मानव मात्र के कल्याण के लिए दिया गया है। इस समय तक लोगों को वेद से दूर करने के लिए अनेक अनर्गल ग्रन्थ बन चुके थे। स्वामी जी ने इन मिथ्या ग्रन्थों का विरोध करते हुए वेद का सत्य ज्ञान सब के सामने रखा और कहा कि यह ज्ञान ही कल्याण का साधन है, सुख देने वाला है। इस पर ही चलो।

नारी की दशा : स्वामी जी ने देखा कि नारी की दशा इस समय अबला की बन चुकी है। इस कारण नारी का कहीं सम्मान नहीं है। स्वामी जी ने नारी की दशा सुधारने का निर्णय लिया तथा कहा कि नारी अर्थात् माता निर्माण करने का कार्य करती है। इस लिए इस का सुशिक्षित होना आवश्यक है। नारी की शिक्षा के जो दरवाजे वर्षों से बन्द हो चुके थे स्वामी जी ने इन कपाटों को नारियों के लिए खोलते हुए कन्या विद्यालय आरंभ किये। लोगों ने जिन्होंने इस कार्य के लिए स्वामी जी का विरोध किया। स्वामी जी ने उस सब की चिन्ता नहीं की। इस का ही परिणाम है कि आज नारियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर आ गयी हैं।

उस समय नारी के तीन घातक शत्रु थे बाल विवाह, बहु विवाह और सती प्रथा। इस के साथ ही साथ पर्दा प्रथा ने भी नारी को पांव की जूती बना रखा था। बाल विवाह के कारण छोटी आयु में ही विधवा हो जाती थी। सती प्रथा के अन्तर्गत उसे पति की मृत्यु होने पर पति के ही साथ जलना होता था। स्वामी जी ने इन सब बुराईयों के विरोध में आवाज़ उठाई तथा नारी की रक्षा के लिए इन कुरीतियों को दूर करने के लिए भीषण शंख नाद किया। उन का ही प्रयास रंग लाया और आज नारी इन कुरीतियों से बच गई है। आज नारी परिवार की अधिष्ठात्री बन गई है देश के सब कार्यालय नारी व्यवसाय के लिए खुल गये हैं।

दलितोद्धार : उस समय दलितों की अवस्था भी नारी की ही भान्ति अधोगति को जा चुकी थी। इस जाति से सम्बन्धित लोगों को साधारण से नागरिक अधिकार भी नहीं थे। यह लोग सार्वजनिक कुंए से पानी तक न ले सकते थे। समाज व्यवस्था के लिए जिन लोगों को सेवा का कार्य सौंपा गया था, आज उन लोगों से बुरा व्यवहार होता स्वामी जी न देख सके। स्वामी जी ने कहा कि ऋषियों ने कर्म के आधार पर जाति व्यवस्था बनायी थी। इस व्यवस्था में जन्म कोई आधार

thearyasamaj.org

नहीं। इसलिए इन्हें भी उठने का अन्यों के ही समान अधिकार है। यदि यह लोग उच्च शिक्षा पा लेते हैं तो उस योग्यता के कारण वह भी वैसी ही योग्यता वालों के समान कार्य प्राप्त करने के अधिकारी हैं। इस प्रकार स्वामी जी ने छुआछूत के विरोध में आवाज़ उठाई। इस का ही परिणाम है कि आर्य समाज में उन दलितों को भी पुरोहित बना दिया, जिन्होंने ऐसी शिक्षा प्राप्त की। आज दलितों को समान अधिकार मिल गये हैं।

भाषा का प्रश्न : स्वामी जी का मानना है कि हमारी संस्कृति का मूल वेद तथा इस के सहायक व व्याख्या ग्रन्थ उपनिषदें तथा वेद के व्याख्या ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ व दर्शन ग्रन्थ आदि सब कुछ संस्कृत में होने के कारण हमें अपने मूल से जुड़े रहने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है।

हिन्दी हमारी जनभाषा है। देश के प्रत्येक छोर में हिन्दी समझी जाती है। इस कारण हिन्दी में देश को एक सूत्र में बांधने की शक्ति है, इसलिए देश का सब काम तथा व्यवहार हिन्दी में करना ही उपयुक्त है। यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इस लिए स्वामी जी ने अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करने का आह्वान किया। स्वामी जी ने आर्य समाज का सब कार्य हिन्दी में ही करने का आदेश भी दिया। स्वाजी जी ने तो हिन्दी के प्रयोग के लिए यहां तक कहा कि जिसने मेरा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना है, वह हिन्दी पढ़े।

गाय रक्षा का प्रश्न : आर्य लोग अपनी आर्थिक सम्पन्नता का आधार गाय को मानते हैं तथा उस व्यक्ति को धनवान माना गया जिसके पास गाय की संख्या अधिक होती थी। गाय कृषि का भी आधार है, गाय के दूध, घी, मूत्र तथा गोबर यहां तक कि इसके दहीं, छाछ आदि भी अनेक रोगों का निदान का कारण होते हैं। फिर गाय हमारी सेवा ऐसे करती है जैसे एक मां करती है। एक गाय अपने जीवन में हजारों लोगों की रक्षा करती है। इसलिए गाय की रक्षा के लिए जोर से नाद गुंजाया। इस की रक्षा के लिए लाखों लोगों से हस्ताक्षर भी लिए।

शुद्धि : मुसलमानों और ईसाईयों के इस देश में आगमन के पश्चात् यहां के मूल निवासियों को जबरन मुसलमान तथा ईसाई बनाने का जो क्रम आरम्भ हुआ, उससे जाति की बहुत हानि हो रही थी। स्वामी जी ने ऐसे लोगों को पुनः अपने माता पिता की गोद में लौटाने का निर्णय लिया। इससे जाति को नया बल मिला।

स्वाधीनता का प्रश्न : स्वामी जी स्वाधीनता के सच्चे अर्थों में पुजारी थे। वह सुराज्य को स्वदेशी राज्य का स्थानापन्न स्वीकार नहीं करते थे। उनका मानना था कि एक सर्वोतम विदेशी सरकार भी घटिया प्रकार की स्वेदशी सरकार से कभी भी अच्छी नहीं हो सकती। वह पूर्ण स्वाधीनता के पक्षधर थे।

मान्यताएं : स्वामी जी वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। वह ईश्वर को यद्यपि सर्वशक्तिमान मानते हुए निराकार मानते थे। त्रैतवाद के पक्षधर स्वामी जी यज्ञ को अत्यन्त उत्तम बताते हुए इसे प्रतिदिन करने के लिए प्रेरित करते थे। वह जाति वाद के पक्ष में न होकर वर्णाश्रम व्यवस्था को पसन्द करते थे। स्वामी जी का पुनर्जन्म में विश्वास था। वह तिलक, जनेउ आदि को धर्म का केवल बाहरी स्वरूप मानते थे किन्तु इसे धर्म नहीं मानते थे। अन्धविश्वास व कुरीतियों से बचने के लिए प्रेरणा देते थे। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता इस कारण ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता। वह वेद आधारित उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति तथा सूत्र ग्रन्थों को आर्ष ग्रन्थ मानते थे तथा इन का पढ़ना आवश्यक मानते थे। स्वामी जी जादू, टोना, चमत्कार तीर्थ आदि के पक्ष में न थे। जीवित माता पिता की श्रद्धा अर्थात श्राद्ध के पक्षधर थे किन्तु मृतक श्राद्ध को पसन्द न करते थे। स्वामी जी मुहुर्त पर भी विश्वास नहीं करते थे तथा सुखी जीवन को स्वर्ग तथा दुःखी जीवन को नरक मानते थे। शाकाहारी भोजन के पक्ष में थे राशिफल तथा फलित ज्योतिष को नहीं मानते थे।

इस प्रकार समय की धारा के उलट चलते हुए स्वामी दयानन्द जी को अनेक पेट पन्थियों तथा अन्ध विश्वासियों ने पसन्द नहीं किया। इस कारण इन स्वार्थियों ने स्वामी जी को अपने मार्ग से हटाने के लिए अनेक बार विष दिया, पत्थर उनके उपर फैंके गये किन्तु स्वामी जी ने कभी चिन्ता नहीं की और निरन्तर समाज कल्याण के कार्य करते रहे। अन्त में यह विष ही उनकी मृत्यु का कारण बना, जो दूध में मिला कर दिया गया और इसके प्रभाव से स्वामी जी सन १८८३ की दीपावली के दिन अजमेर नगर में इस संसार को छोड़ कर विदा हुए।

thearyasamaj.org

ऋषिबोधोत्सव

ले०—श्री भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य 92/7 बी, होशियारपुर

आर्यसमाज शिवरात्रि को ऋषिबोधोत्सव के रूप में मनाता है। इस पर एक स्वाभाविक प्रश्न उभरता है कि शिव शब्द का जब सीधा सा अर्थ है-कल्याण, सुख और रात्रि-रात। तब प्रचलित परम्परा से यहां क्या विशेष अभिप्राय है ? और इस शब्द तथा अर्थ का परस्पर क्या कोई तालमेल है ? शिवरात्रि इस समस्तपद से एक और प्रश्नमाला यह भी पनपती है कि यहां इन दोनों पदों का क्या तात्पर्य है तथा यह पर्व, व्रत-रात को ही क्यों आयोजित किया जाता है ? जब कि बहुत सारे भारतीयों के घरों तथा दुकानों में शिव का एक अनोखा सा चित्र भी देखने में आता है। जिस आलंकारिक रूप में शिव की जटाओं से गंगा प्रवाहित हो रही है, मस्तिष्क के ऊपरी भाग पर चन्द्रमा चमक रहा है तथा नीचे एक तीसरी आंख भी है, जिस के गले में विषधर लिपटे हुए हैं इत्यादि।

जब शिवपुराण चर्चित इन भावनाओं के साथ अनेक वर्षों से शिवरात्रि मनाई जा रही थी तो 1838 में गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में एक ऐतिहासिक घटना घटी।

पिता जी की प्रेरणा पर 14 वर्षीय बालक मूल शंकर शिवरात्री की पहली सायं कथा सुनने के लिए गया। कथा में सुने विचारों से प्रभावित होकर मूल ने पूर्ण श्रद्धा, विश्वास से सारा दिन निराहार व्रत रख कर उस की पूर्ति के लिए रात्रि का जागरण करते हुए देखा कि भक्तों ने बड़ी श्रद्धा से जिस प्रसाद को शिव जी को समर्पित किया था, उस को चूहे खा रहे हैं। जब कि पण्डित जी ने कथा में बताया था कि शिव जी बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। उन्होंने अनेक राक्षसों को मारा है और कई दुर्गों को गिराया है। जब बालक मूल ने पिता जी को जगा कर बड़ी हैरानी से पूछा कि ये महान शिव इन चूहों को प्रशाद खाने से रोकते क्यों नहीं ? इस प्रकार के उभरे अनेक प्रश्न पूछे, पर पिता जी के उत्तरों से मूल के मन को सन्तोष न हुआ, हां, यह सुनकर कि यह सच्चा शिव नहीं है, मूल ने मन ही मन सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा की और पिता जी से अनुमति लेकर मूल मन्दिर से घर लौट आया। व्रतभंग और पूजा से विरक्ति के कारण पिता जी का रोष मूल के प्रति धीरे-धीरे जहां कुछ शान्त हुआ, वहां पूर्ववत मूल की पढ़ाई चलती रही।

मूलशंकर का जीवन जब मैदानी नदी की तरह चल रहा था, तो एक बार रात को पिता जी के साथ नाटक देखते हुए सूचना आई कि मूल की बहन की हैजे से मौत हो गई है। मूल के जीवन में मौत की यह पहली घटना थी, अतः कुमार मूल को कुछ समझ में न आया। वह केवल परिवार की विह्वलता को देखता रह गया। कुछ वर्ष बाद जब मूल के प्रिय चाचा की मृत्यु हुई, तो मूल को पता चला कि मृत्यु अपनों को छीन कर उन की छत्रछाया से किस प्रकार वंचित कर देती है। मृत्यु से उभरी अनेक जिज्ञासाओं ने मूल की वैराग्य भावना को खूब बढ़ाया। अतः मृत्यु विजय का विचार उभरा।

इस प्रकार सच्चे शिवदर्शन की पहली गांठ के साथ दूसरी गांठ भी आकर जुड़ गई। इन गांठों को खोलने की उधेड़बुन के दिनों में युवा मूल को जो भी विद्वान, साधु, महात्मा मिला, मूल ने उसी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी। सभी से एक सा उत्तर मिला कि यह सब योग से ही साधा जा सकता है योग किसी गुरु से सीखा जा सकता है। इन्हीं दिनों मूल ने माता-पिता से विशेष अध्ययन के लिए काशी जाने की अनुमति मांगी, पर समीपवर्ती पाठशाला की ही स्वीकृति मिली। वहां पाठ्य पुस्तकों को पढ़ते हुए समय-समय पर मूल ने अपनी विशेष जिज्ञासायें भी हल करनी चाहीं और योग सीखने की इच्छा प्रकट की तो पढ़ाने वाले ने युवक मूल के पिता को ही तब सावधान कर दिया। अतः मूल को घर वापस बुला कर उस के विवाह की तैयारियां शुरु कर दी गईं।

इस नए बन्धन को भांप कर युवक मूल एक दिन सायंकाल योग सिखाने वाले गुरु की खोज में निकल पड़ा। इस खोज के लिए वह मूल पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बन कर लगातार चौदह वर्ष भटकता रहा। इस के लिए मैदानों, पहाड़ों, जंगलों, बर्फीली नदियों की खाक छानी। इन दिनों शास्त्र के नाम पर जिस ने जो पढ़ाया, सो पढ़ा और योग के रूप में जिस ने जो योग सिखाया-सो सीखा। अन्त में मथुरा जाकर ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी को गुरु के रूप में स्वीकार किया। जिन से लगभग तीन वर्ष विशेष रूप से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया।

एक दिन दयानन्द अपने गुरु से विदा लेने के लिये पहुंचे, तो गुरु जी ने पूर्वप्रतिज्ञाओं को परोक्ष में कराकर जीवन का कांटा ही बदल दिया। गुरु आज्ञा के अनुरूप आर्षज्ञान का दीप जलाते हुए ऋषि दयानन्द सरस्वती एक नगर से दूसरे नगर पहुंचे। इस ज्ञान दीप को सदा प्रज्वलित रखने के लिए महर्षि दयानन्द ने 1875 में

thearyasamaj.org

आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने अपने कर्तव्य को पहचाना, अपनाया और फिर महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शिवरात्री को ऋषिबोधोत्सव का रूप दिया, क्योंकि इसी दिन मूल के मन में विचार क्रान्ति का बीज प्रथम अंकुरित हुआ था।

ऋषि जीवन की सारी कथा सामने आने पर एक प्रश्नमाला और भी उभरती है, कि ऋषिबोधोत्सव का अभिप्राय क्या है क्या यह बोध गौतमबुद्ध के बोध की तरह वर्षों की तपस्या के पश्चात् परिस्थितियों के अनुभव से उभरे जैसा है ? या अर्जुन ने योगेश्वर श्री कृष्ण से गीताज्ञान प्राप्त करने पर जैसे कहा था 'नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा (गी. 18,73) क्या वैसी ही स्थिति यहां भी है ? हां यह बात स्वीकार कर लेने पर पुन: जिज्ञासा उभरती है, कि वह ऋषि का बोध कौन सा है ? जिस का उत्सव, उल्लास, खुशी आर्यसमाज आयोजित कर रहा है ? ऋषि का वह बोध मेरे-आप के पास अब भी है या वह ऋषि के साथ चला गया है ? वह बोध अब भी है, तो हमारे अन्दर अन्यों की अपेक्षा क्या कोई अनोखापन है ? जैसे किसी वस्तु का प्राप्तकर्ता या प्रकाश वाला सन्तोष, विश्वास अनुभव करता है, क्या वैसी खुशी हमारे अन्दर इस समय है ? या केवल दूसरों की तरह हम भी आज यहां घटना को याद करने या गाने के लिए ही आये हैं। हां यदि ऋषिबोध में कोई खूबी है, तो उस पर एक नई प्रश्नपंक्ति यह उभरती है, कि आज की परिस्थितियों में उस बोध का क्या उपयोग है ? अर्थात् आज के हमारे जीवन में यह बोध कहां, कितना सहायक है ? हां यदि उस बोध ने केवल अपने समय पर कुछ अनोखापन दर्शाया था तो फिर वह ऋषिबोध जार्ज स्टीफैंसन, जेम्सवाट के इंजन की तरह केवल पुरातत्व की वस्तु ही होगा और तब वह ऋषिबोध स्मरणीय, अभिनन्दनीय तो कहा जा सकता है, अनुकरणीय नहीं ?'

आर्य समाज ऋषिदयानन्द के बोध को यदि सूर्य आदिवत् सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनिक मानता है, तब तो खुले दिल से यह कहा जा सकता है :

'जिस का दिल चाहे-वह आज़माए'

हां, यहां कुछ यह भी पूछ सकते हैं, कि ऋषि दयानन्द ने क्या कोई अपूर्व देन दी है, जिस को इतना महत्त्व दिया जा रहा है। जब कि हम देखते हैं कि महर्षि और आर्यसमाज दूसरों की तरह ही वेद, उपनिषद, स्मृति, रामायण, महाभारत तथा ईश्वर, यज्ञ, भक्ति की ही बात करते हैं। ऐसी स्पष्ट स्थिति होने पर यह बताना और भी आवश्यक हो जाता है कि सारे भारतीय साहित्य, धर्म के परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द का अपना योगदान क्या है ? आइए ! पूर्व उभारे गए प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए पहले अन्तिम बात से ही चर्चा आरम्भ करते हैं।

नि: सन्देह महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट घोषणा की है, कि "जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिन को कि मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है, उस को मानना-मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।"

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश-पृ० 582 यहां सर्वत्र स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश स्वामी, वेदानन्द संस्करण की पृष्ठ संख्या है।

"(पूर्वपक्ष) तुम्हारा क्या मत है ? (उत्तरपक्ष) वेद अर्थात् जो जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। इस लिए वेद हम को मान्य है, इस लिए हमारा मत वेद है।"

सत्यप्रकाश समुल्लास-3, पृष्ठ 67

ऐसी स्थिति में जब हम महर्षि के योगदान की बात करते हैं, तो तुलनात्मक विवेचन से यह बात सामने आती है, कि महर्षि का अपूर्व योगदान यही है, कि महर्षि ने वेद की मान्यताओं को एक सुसंगत रूप दिया और यही महर्षि का तत्त्वबोध है। जिस का आर्यसमाज अनुयायी बनकर उल्लासपूर्वक इस ऋषिबोधोत्त्सव को आयोजित करता है। यह तत्त्वबोध जहां शास्त्रों के प्रमाणों से परिपुष्ट है, वहां उसमें तर्क का संगतिकरण ही महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध का सुसंगतपन है। जैसे कि:

सुसंगतपन-

1-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज एक दौड़ सी लगी हुई है। हर एक सफल होने के लिए जल्दी से जल्दी सब से पहले मंज़िल पर पहुंचना चाहता है। लक्ष्य को साधने और सफलता, प्राप्ति के लिए जहां रास्ता स्पष्ट, सुनिश्चित होना चाहिए, वहां यदि मार्ग सरल, सीधा हो, तो सफलता, प्रगति सरलता से मिल जाती है, क्योंकि प्रगति में गति शब्द जुड़ा हुआ है। अच्छी गति के लिए रास्ते का सरल, स्पष्ट, सक्षम, सुरक्षित होना बहुत ज़रूरी है। अधिकतर दो तरह के ही रास्ते हैं, जिन को संगत और असंगत रूप में दो प्रकार के पथ प्राप्त होते हैं।

2-महर्षि दयानन्द के तत्त्वबोध की दूसरी खूबी यह भी है, कि यह प्रकाश की तरह स्पष्ट, सुनिश्चित और सन्देह-भ्रम-भय रहित है। जैसे कि प्रकाश में वस्तु और स्थल के स्पष्ट होने से कार्य करना सरल होता है और अन्धकार में कार्य करना जहां कठिन, वहां ठोकर, भय, भ्रम, संशय बना रहता है। इसी दृष्टि से ही अन्याय, अत्याचार के लिए अन्धेरे शब्द का प्रयोग होता है। प्रकाश के समान ही महर्षि का तत्त्वबोध जीवन के हर व्यवहार का एक स्पष्ट, सुनिश्चित, भ्रम-भय-संशयरहित रूप दर्शाता है। तब उस

thearyasamaj.org

को अपनाने से कार्य की सिद्धि सरल हो जाती है। इस के साथ सिद्धि न होने पर होने वाली असफलता, ठोकर और धोखे का डर भी नहीं रहता है

उदाहरण-ऋषिबोध कितना सुसंगत और प्रकाश सदृश है, इस की पहचान के लिए पहला स्पष्ट सा नमूना है-विवाह विषयक ऋषि दयानन्द का वर्णन। इस के सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थसमुल्लास में महर्षि ने विस्तार पूर्वक विवेचन किया है। इस के लिए जहां वेदादि शास्त्रों के प्रमाण दिए हैं, वहां युक्ति एवं तर्क से भी विचार किया है। उदाहरण के लिए यह एक ही उदाहरण आयु की दृष्टि से पर्याप्त होगा।

''आठ, नौ और दशवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें पर्यन्त विवाह करने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होती है।'' 4.76

महर्षि स्वामी दयानन्द के विचारों की सुसंगति को पहचानने का दूसरा उदाहरण पारस्परिक अभिवादन का लिया जा सकता है। जब एक व्यक्ति दूसरे से मिलता है, तो आपस में मिलने पर स्वाभाविक रूप से आदर की भावना उभरती है। जिस से परस्पर प्रसन्नता, सम्मान और अपनापन आता है। अतएव सभी देशों, वर्गों, धर्मों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द और शारीरिक चेष्टा आदि के अनेक रूप प्रचलित है। एतदर्थ महर्षि दयानन्द का विचार है-''बड़ों को मान्य दे, उस के सामने उठ कर जा के उच्चासन पर बैठावे प्रथम नमस्ते कहे।''

सत्यार्थ 2, 36

''दिन रात में जब जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों तब तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें।'' 4, 89

अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग अवसर के अनुरूप तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूलभावना से हर तरह से मेल खाता है।

ऋषिबोध के सुसंगतपन की तीसरी कसौटी है-सामूहिक नाम

आर्य-व्यवहार में सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक का अपना-अपना नाम होता है। प्रत्येक का जहां अपना-अपना वैयक्तिक नाम होता है, वहां सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। जिस-जिस दृष्टि से सामूहिक संगठन होता है, उसी-उसी दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का नाम प्राप्त होता है, जैसे कि धर्म, देश, राजनीति, कारोबार (यूनियन के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, फौजी, दुकानदार आदि) की दृष्टि से नाम प्रचलित हैं। इन सीमित समूहों की तरह इन सभी समूहों का एक सांझा सामूहिक नाम होना चाहिए। अतः महर्षि दयानन्द का सिद्धान्त है, कि हमारा ऐसा सामूहिक नाम आर्य है, क्योंकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है, उस में सर्वत्र इस दृष्टि से आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है। यह प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण, सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है, कि किसी देश का नागरिक जहां-कहीं, जब-कभी इस का प्रयोग करना चाहे वह कर सकता है। प्रयोग करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा और भावना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है, क्योंकि आर्य शब्द का सीधा सा अर्थ है-अच्छा, श्रेष्ठ, भला। अतः नमस्ते की तरह आर्य शब्द से भी स्पष्ट होता है कि महर्षि के मन्तव्य-शास्त्रसम्मत तथा तर्क संगत है।

इन सामान्य बातों की तरह जब हम जीवन के मूलभूत तत्त्वबोध के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो पता चलता है, कि महर्षि दयानन्द ने जीवन के सर्वांगीण विकास और निखार के लिए भी एक सुसंगत तत्त्वबोध दिया है। जो कि 'एकेश्वरवाद, मनुष्य जाति की एकता, धर्म= अच्छे आचरण का नाम है और सभी महापुरुषों का सम्मान' के रूप में है। आईए ! इन पर भी कुछ संक्षिप्त विचार करें।

1-एकेश्वरवाद-एकेश्वरवाद का अर्थ है, एक ईश्वर की मान्यता। हमारे चारों ओर पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य आदि अनेक प्राकृतिक पदार्थ हैं, जो कि हम जैसे किसी मनुष्य ने नहीं बनाये। इन प्राकृतिक पदार्थों की रचना, व्यवस्था किसी के करने से ही होती है। इन की व्यवस्था बताती है, कि इसका कोई न कोई कर्ता-धर्ता और नियामक अवश्य है, और वही ईश्वर है। ईश्वर के द्वारा होने वाले प्राकृतिक कार्य सभी स्थानों पर एकरूप में ही अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। तभी तो सभी स्थानों पर अन्न, फूल, फल, खनिज, धातुएं एक रूप में ही मिलती हैं। यह एकरूपता एवं समान व्यवस्था अपने उत्पादक, व्यवस्थापक की एकता को ही सिद्ध करती हैं।

इसी प्रकार सभी प्राणियों की अपनी-अपनी शरीर रचना, अंगसंस्थान और उन का कार्य एक सा ही है। प्रदेश का सामान्य सा ही भेद तथा प्रभाव होता है। यह एकरूपता, समानता भी अपने कर्ता की एकता को ही सिद्ध करती है। शास्त्रों में जगत के कर्ता-धर्ता-संहर्ता का एक रूप में ही विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। हां, वहां प्रकरण के अनुरूप उस के गुण, कर्म, स्वभाव को बताने के लिए भिन्न-भिन्न नामों का संकेत प्राप्त होता है, पर उन नामों का नामी एक ही है। इसके विशेष विवेचनार्थ-'वेद की कुंजी-प्रथम समुल्लास' पढ़िये।

ईश्वर के एक होने से ही उस के सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्व-व्यापक, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान आदि गुण चरितार्थ होते हैं। एक से अधिक होने पर वह सर्वव्यापक आदि गुण वाला कैसे हो सकता है। ऐसे गुणयुक्त ईश्वर को मानने से ही उस की 'कर्मफल व्यवस्था' पर पूर्णतः विश्वास जमता है। इसी विश्वास पर ही कोई सर्वथा पवित्र रहता है तथा सदा शुभ कर्मों में जुटा रहता है।

thearyasamaj.org

एकेश्वरवाद की मान्यता के अनुसार महर्षि का यह दृढ़ विश्वास है, कि ईश्वर के कार्य जब अन्य कोई नहीं कर सकता है, तो ईश्वर की इस दया को ध्यान में रखते हुए हमें कृतज्ञता के रूप में ईश्वर की ही पूजा, भक्ति, उपासना करनी चाहिए। भक्ति द्वारा ईश्वर से अपना-अपना निकट सम्बन्ध अनुभव करने से आत्मिक शक्ति, शान्ति मिलती है। ईश्वर के स्थान पर अन्य देवी-देवताओं, अवतारों, पैगम्बरों, गुरुओं, माताओं, बाबाओं की उपासना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इन में से कोई भी ईश्वर के कार्यों को करने में समर्थ नहीं है ? अर्थात् हमारी उपासना और प्रार्थना का एक मात्र आधार और हमारा इष्टदेव ईश्वर ही है।

2. मानव जाति की एकता-सभी मनुष्यों के शरीर, अंग संस्थान एवं उन का कार्य एक ढंग का ही है। भौगोलिक दृष्टि से रूप, रंग का बहुत कम ही अन्तर होता है। सभी के हृदयों में सुख-शान्ति, स्नेह की एक सी ही भावना होती है। सभी के खून का रंग लाल और सब की आत्मा अजर-अमर ही है। अत: प्रदेश, धर्म, भाषा, रंग, वर्ग के भेद के आधार पर परस्पर भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

मानव समाज के स्त्री-पुरुष में भी सामान्य सा ही भेद होता है। इतने भेद से कोई ऊंचा-निम्न नहीं हो जाता। वस्तुत: ये दोनों मानव समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं और दोनों का अपना-अपना महत्व है। दोनों को समानरूप से एक दूसरे के सहयोग, सदभाव की आवश्यकता होती है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। अत: इस समानता और पूरकता के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है, कि एक मानव से दूसरे मानव और स्त्री-पुरुष में शिक्षा, योग्यता, सदाचार आदि के कारण ही छोटे-बड़े या अच्छे-बुरे अर्थात् असमानता का अन्त होता है।

अत: मानवजाति की एकता, समानता के कारण सब को समान रूप से प्रगति एवं प्रगतिदायक शिक्षा, धर्म आदि का समान अवसर और अधिकार प्राप्त होना चाहिए। ऐसा वहीं हो सकता है, जहां सब में समानता की भावना होती है। ऐसा व्यक्ति फिर किसी से सामाजिक उच्चता-निम्नता और जन्मना स्पृश्यता-अस्पृश्यता का भेदभाव नहीं करता। जब किसी व्यक्ति में यह विश्वास पूर्णरूपेण होता है, कि सारी मानव जाति एक जैसी ही है, तब वह किसी को केवल किसी विशेष परिवार, वर्ग में जन्म लेने के कारण या स्त्री होने से या किसी विशेष प्रदेश, भाषा, धर्म से सम्बन्ध रखने के कारण किसी को अछूत या हल्का नहीं मानता और न ही इस आधार पर किसी से ईर्ष्या, द्वेष, घृणा करता है। ऐसा करने से परस्पर दूरी बढ़ती है और तब सामाजिक कार्यों में स्नेह, सद्भाव, सहयोग प्राप्त होना कठिन हो जाता है। इस से परस्पर एकता, संगठन भी नहीं पनपता है।

दूसरी ओर जब कोई किसी को केवल विशेष परिवार, वर्ग में जन्म लेने के कारण या पुरुष होने से या विशेष धर्म, भाषा, प्रदेश से जुड़ा होने के कारण अधिक अच्छा मानता है तो ऐसे विशेष अपने आप को दूसरों से अलग रखने लगते हैं। इससे आपस की एकता को ठेस लगती है अर्थात् सुदृढ़ता में अड़चन आती है। मानव समाज की स्थिति सामाजिक दृष्टि से हाथ की अंगुलियों की तरह है, जो आपस में काफी भिन्नता रखती हैं, उन में से कोई लम्बी है तो कोई छोटी, एक मोटी है तो दूसरी पतली, पर वे जब भी कार्य करने लगती हैं, तो उस समय एक रूप में आ जाती हैं। जैसे कि लिखने, खाने, पकड़ने का कार्य करते समय भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार, शक्ति रखती हुई भी ये अंगुलियां उस-उस कार्य के अनुरूप एक स्थिति में आ जाती हैं। वैसे ही सामाजिक कार्यों में हम सबको एकता का व्यवहार करना चाहिए।

3. धर्म=अच्छे आचरण का नाम है-ऋषि दयानन्द के तत्त्वबोध का तीसरा मूलमन्तव्य है-धर्म। धर्म शब्द वस्तुत: अच्छे आचरण का ही नाम है और आचरण को अच्छा बनाने के लिए ही धर्म की अपेक्षा होती है। नि:सन्देह शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में आता है, पर धर्म का मुख्य अर्थ है-सत्य, ईमानदारी, स्नेह, सहयोग आदि। ये वे गुण हैं, जिन को अपने स्वभाव का अंग बनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज सुखी, व्यवस्थित होते हैं। धर्म प्रेरणा द्वारा व्यक्ति के स्वभाव को सुन्दर बनाता है। वह व्यक्ति पर कुछ थोपता नहीं, अपितु स्वभाव का अंग बनाता है। जिससे व्यक्ति स्वयं ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की तरह अच्छाई की राह पर चले।

जैसे कि सामाजिकता के कारण हमारे आपस में माता पिता, पुत्र, भाई, बहन, मित्र आदि के रूप में सम्बन्ध हैं। आपस के सम्बन्ध के अनुरूप उस-उस सम्बन्ध को निभाने से ही आपस के सामाजिक सम्बन्ध जहां सुन्दर बनते हैं, वहां परस्पर स्नेह, सहयोग भी मिलता है। अतएव मनुस्मृति में 2, 227 से 237 तक इस प्रकार के व्यवहार तथा सम्बन्ध के पालन को भी धर्म कहा है। इसी प्रकार आपस में एक-दूसरे के साथ सत्य और प्रिय बोलने को मनुस्मृति 4,138 में सब से पुराना, परखा हुआ धर्म कहा है। क्योंकि आपस में ठीक बोलने से सामाजिक व्यवहार तथा समाज सुखी और टिका रहता है।

शास्त्रों में धर्म शब्द-कर्मकाण्ड=पूजा-पाठ, जप-तप, स्मरण-ध्यान, तीर्थ-व्रत, धार्मिक निशानियां, विश्वास, सिद्धान्त, स्वभाव, ढंग और आचार आदि अनेक अर्थों में आता है। पर इन अर्थों में से 'आचार: परमो धर्म:' मनु. 1,108 के अनुसार आचरण ही मुख्य है। तभी तो मनु, 6,92 में धृति, क्षमा, संयम, सत्य आदि आचरण की बातों को धर्म की पहचान बताया गया है। धर्म की ये बातें आचरण में आने पर ही चरितार्थ होती हैं। धर्म का यह आचरण पक्ष ही ऐसा है, जिस के सम्बन्ध में सभी धर्म एक मत हैं तथा सभी धर्म इन को स्वीकार करते हैं। हां, धर्म नदी के पुल, नौका की तरह जीवन यात्रा को सरल बनाता है। विशेष जानकारी के लिए 'सरल-

thearyasamaj.org

सुखी जीवन' देखिए।

4. सभी महापुरुषों का सम्मान-संसार में समय-समय पर अनेक विशेष व्यक्ति हुए, जिन्होंने मानव जाति को सुखी, समृद्ध, विकसित बनाने के लिए सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और भौतिक विज्ञान आदि के क्षेत्र में विशेष कार्य किया। अपने समय और स्थान पर जिसने जिस भी क्षेत्र में जैसा योगदान दिया है, वह अपने योगदान के अनुरूप सभी के सम्मान का पात्र है। क्योंकि उन व्यक्तियों का योगदान ही आज के विकसित रूप को यहां तक पहुंचाने में सहयोगी बना है। जैसे कि राईट बन्धुओं द्वारा वायुयान विषयक किया गया प्रयास आज के विकसित वायुयानों के विकास में कारण बना है।

जिस महापुरुष ने जितने तप-तप कर जैसे-कैसे कष्ट सह कर जितनी शिक्षा, योग्यता अर्जित की तथा अपनी अर्जित योग्यता से संयम के साथ मानव जाति के हित का जैसा कार्य किया, वह तदनुरूप सत्कार के योग्य है। वस्तुतः जनता को जितना लाभ हुआ, यह बात जहां महत्त्व की है, वहां सेवा करने वाले ने कितने संयम से सेवा की, यह एक विशेष बात है। क्योंकि विकार के अवसर आने पर भी अपने आप को जो भ्रष्ट नहीं होने देते, वे और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

महापुरुषों द्वारा विविध क्षेत्रों में किए गए महान् कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। हां अब क्या अनुकरणीय है और क्या केवल स्मरणीय है ? इस का निर्णय तो आज की विकसित परिस्थिति के अनुरूप ही होना चाहिए, न कि केवल अपनेपन के आधार पर या प्राचीनता से। इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी रचनाओं में श्रीराम, कृष्ण, भोज, शिवा, ईसा, नामक आदि की उस-उस विशेष देन के कारण प्रशंसा की है। बिना किसी यथार्थ आधार के किसी भी महापुरुष की निन्दा करने वालों की निन्दा की है और इसी दृष्टि से भी पुराणों को पसन्द नहीं किया। क्योंकि वहां अधिकतम की अपने से भिन्न होने के कारण निन्दा प्राप्त होती है।

इस संक्षिप्त चित्रण से जहां यह स्पष्ट हो जाता है, कि ऋषि दयानन्द का तत्त्वबोध सर्वथा शास्त्रसम्मत और तर्कसंगत होने से सुसंगत पथ कहा जा सकता है। हां, 'गहरे पानी पैठ' वाले पाठक अनुभव करते होंगे, कि यहां हर बात को ऐसे कहा गया है, जैसे कि किसी को बोलते-बोलते रोक दिया गया हो। ऐसी स्थिति में पाठक की स्थिति प्रतीक्षा के उसी रूप को धारण कर लेती है, जिस के लिए कहा जा सकता है-

बड़े गौर से पढ़ रहे थे पढ़ने वाले।
पर क्यों रुक गए लिखते-लिखते॥

ऐसी प्रतीक्षा भरे पाठकों से निवेदन है, कि वे सुसंगत जीवनपथ, (महर्षि दयानन्द प्रदर्शित) पढ़ें।

पृष्ठ 13 का शेष- स्वामी दयानन्द.....

परमेश्वर से लेकर तर्कों साक्षात् पदार्थों का बोध होता हो तथा मानव जाति के कल्याण में उसका यथावत् उपयोग होता है। इस प्रकार विज्ञान वेदों का मुख्य विषय है-स्वामी दयानन्द जी विज्ञान के भी दो रूप मानते है-(1) ईश्वर का यथावत् ज्ञान एवम् उसकी आज्ञाओं का पालन। (2) पदार्थ विद्या का ज्ञान अर्थात् पदार्थ के गुणों को व उपयोग को जानना।

इन दोनों में स्वामी जी ने वेदों में ईश्वर विषय को ही मुख्य प्रतिपाद्य विषय बनाया। स्वामी जी अब वेद प्रचार के लिए निकले तो देखा की तरह-तरह की कुरीतियां समाज में फैली हुई हैं। लोग अंधविश्वासों के चंगुल में बुरी तरह जकड़े हुए है। अंधविश्वासों का अंधेरा छांटने के लिए जब स्वामी जी ने बार-बार कटु सच्चाइयों को लोगों के सामने रखा। विज्ञान सम्मत तर्क रखें। उन्होंने सभी धर्मों के पाखण्डों पर, पोप लीलाओं पर जमकर चोट की। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह अपने परायें का भेद किये बगैर तमाम धार्मिक विश्वासों पर जमी काई हटाने का प्रयास किया।

स्वामी जी के विचारों की प्रासंगिकता आज भी बराबर बनी हुई है। उस समय तो विदेशी सत्ता हमारे ऊपर हावी थी। तब उनके भय में हम देवी-देवताओं और अंधविश्वासों के दलदल में फँसते चले गये। लेकिन हालात आज भी वही है। आर्य समाज की प्रांसगिकता पर प्रश्न चिहन लगाने वाले एक प्रकार के वे लोग है जो ये कहते है, कि आर्य समाज पुरातनपन्थी है, क्योंकि वह वेदों की ओर लौटने का नारा देते है। परन्तु पुराना होने से सब कुछ बुरा नहीं हो जाता और नया होने से रम्य नहीं हो जाता। इसलिए स्वामी जी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्राचीन और नवीन का इस ढंग से समन्वय होना चाहिए, कि वह मानवता के विकास में सहायक हो। हमारे वेदों में अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों का वर्णन है-जैसे कि विमान जिसे अब हवाई जहाज कहते है अस्त्र-शर-संयोग जिसे अब हम बदूंक कहते है। अनेक प्रकार के बाण सुदर्शन चक्र आदि वैज्ञानिक अविष्कार है, यंत्रवर्त आधुनिक युग में जिन्हें हम मशीनें कहते है आदि। समय की पुकार है, कि समाज में बड़ी गहराई तक व्याप्त अंधविश्वासों को जड़ से उखाड़ कर फैंका जाये, और स्वामी जी के विज्ञान पर आधारित विचारों को घर-घर पहुँचाया जाये। उनकी उपलब्धियां, आईन्सटाइन, गैलीलियों, न्यूटन की उपलब्धियों से किसी प्रकार से कम नहीं। इनके विचार वैज्ञानिक है, सार्वभौमिक है, इसके साथ ही साथ वह धार्मिक पंथ द्रष्टा समाज सुधारक थे। उनकी विचारधारा मूलतः वैज्ञानिक तर्कों पर आधारित थी। स्वामी जी के बारे में हम कह सकते हैं-

बेचेनियां समेटकर सारे जहान् की
जब कुछ न बन सका, तो दयानन्द बना दिया।

thearyasamaj.org

स्वयं विषपान कर संसार को अमृत पिलाने वाला अनोखा ऋषि दयानन्द सरस्वती

ले०—श्री मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

महर्षि दयानन्द का शिवरात्रि से गहरा ऐतिहासिक सम्बन्ध है। शिवरात्रि के व्रत ने ही बालक मूलशंकर को सच्चे शिव अर्थात् सृष्टि के रचयिता ईश्वर की खोज करने की प्रेरणा की। घर व परिवारजनों के बीच रहकर वह अपना अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते थे। इसके लिए उन्हें ऐसे विद्वानों, आचार्यों, व्याकरणाचार्यों, योगियों, चिन्तकों, मनीषियों तथा वेदज्ञों की संगति, उनके प्रशिक्षण व मार्गदर्शन की आवश्यकता थी जो उनकी शंकाओं को समझकर उन्हें दूर कर सकें। अतः घर छोड़ने का कठिन निर्णय उन्होंने लिया। सन् 1842 ई. से स्वामी दयानन्द की बालक मूलशंकर के रूप में सच्चे शिव की खोज आरम्भ होती है। इस कार्य के लिए उनका मार्ग दर्शन करने वाला कोई नहीं है। उन्होंने अपना उद्देश्य निर्धारित कर लिया और उसको प्राप्त करने की योजना की रूपरेखा उन्हें स्वयं ही बनानी है। उनका पहला कार्य यह था कि वह परिवारजनों से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंच जायें जहां वह निश्चिन्तता से अपने मार्ग पर आगे बढ़ सकें। अपने परिवारजनों से दूर रहकर वह ज्ञानी व योगियों की संगति से अपनी सभी शंकाओं का समाधान कर सच्चे शिव व सृष्टिकर्ता ईश्वर को जान कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लें। साथ ही मुक्ति की प्राप्ति के उपायों को जान कर उसके अनुरूप साधना कर कृतकार्य हो सकें। उनके जीवन के अध्येता व अनुयायी यह भली प्रकार जानते हैं कि वह अपनी खोज में सफल रहे। उनकी खोज से वह स्वयं अकेले ही लाभान्वित नहीं हुए अपितु उससे समूचे भारतीय समाज के साथ सारा विश्व भी लाभान्वित एवं प्रभावित हुआ। 27 फरवरी, 2014 को आ रही शिवरात्रि व उससे 4 दिन पूर्व उनका जन्म दिवस है। यह दो दिन भारत व विश्व के इतिहास के दो गरिमापूर्ण एवं महनीय दिवस हैं। इनकी महत्ता इस कारण है कि सूर्यास्त से उत्पन्न अन्धकार की भांति महाभारत युद्ध के पश्चात वेद व आर्ष ज्ञान के विलुप्त होने पर भारत व विश्व के लोग नाना प्रकार के अन्धविश्वासों, पाखण्डों, कुरीतियों में फंस गये थे। लगभग 5,000 वर्ष तक वेद व आर्ष ज्ञान प्रायः विलुप्त रहा। महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व तप, ज्ञान, जिजिविषा व योग बल से उस विलुप्त ज्ञान को प्राप्त किया और उसे मानव मात्र को सुलभ कराया। इस कारण वह सृष्टि के इतिहास में सर्वोपरि स्थान को प्राप्त हुए। महाभारत के पश्चात व महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व यह हुआ कि संसार के लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप को भूल गये थे। सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन को पाकर भी उसका लक्ष्य प्राप्त करने के स्थान पर पहले से भी अधिक पतित होते जा रहे थे। पतन की चरम स्थिति तक पहुंच जाने की अवस्था के कारणों पर विचार कर उसके निवारणार्थ ज्ञान व विद्या प्राप्त कर दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष व अपवर्ग प्राप्ति तक का चिन्तन करने में संसार के लोग सर्वथा असमर्थ थे। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ और उन्होंने हर बात का समाधान किया जिससे उनके समय व बाद का सारा संसार उनका कृतज्ञ है।

शिवरात्रि के इस दिन हम आर्य समाज के मन्दिरों में जाकर वहां वेदों के विद्वानों के सान्निध्य में आत्मा, परमात्मा व सृष्टि के उपभोग से जुड़े प्रश्नों पर सारगर्भित प्रवचन व उपदेश सुनकर यथार्थ ज्ञान को प्राप्त होते हैं। प्रवचनों व अपने दैनन्दिन स्वाध्याय से मन में समुद्र की तरंगों की भांति समय-समय पर उठने वाले सत्य संकल्पों को जीवन में धारण कर ईश्वर-साक्षात्कार की स्थिति तक पहुंचने में अग्रसर व सफल हों, यही इस दिवस को मनाने की सार्थकता है। यदि इस दिन अवकाश करके केवल अन्न ग्रहण न कर उपवास रखने, शिव के काल्पनिक चित्र, मूर्ति व कथा को स्मरण कर व पौराणिक रीत्यानुसार शिव की स्तुति व आरती आदि करके शिवरात्रि व ऋषि बोध दिवस को मनाते हैं तो हम कहेगें कि हमारे ऐसे भाईयों व बहिनों को शिवरात्रि मनाना ही नहीं आता। वह अन्धकार में पड़े होने पर भी यह अनुभव ही नहीं कर पा रहे हैं कि वह अन्धकार से ग्रसित हैं। अज्ञान के अन्धकार से ग्रसित व्यक्ति को यदि अपने स्वरूप व स्थिति का यथार्थ ज्ञान न हो तो फिर उसका कल्याण होना कठिन वा असम्भव होता है। ऐसी ही कुछ स्थिति पौराणिक विधियों से शिवरात्रि मनाने वाले हमारे भाईयों की है और साथ में अन्य मतावलम्बी भी इन्हीं पौराणिक भाईयों की तरह अन्धकार से आवृत अपने पुराने संस्कारों की कमाई, प्रारब्ध को भोग कर सुख अनुभव कर रहे हैं जिससे उनका प्रारब्ध व पुण्य कर्म घट रहे हैं और आगे के लिए जमा-पूंजी-रूपी-प्रारम्भ के न बचने के कारण उनके लिए हानि, दुःख, चिन्ता, निराशा, रोग व क्लेश आदि की स्थिति बन रही है।

लगभग 2,500 वर्ष पूर्व बौद्ध व जैन मत का प्रादूर्भाव प्रायः कुछ अन्तराल के आस-पास हुआ और मूर्तिपूजा इन्हीं के द्वारा न केवल भारत में अपितु संसार भर में प्रचलित हुई। इससे पूर्व भारत वर्ष व विश्व में कहीं भी मूर्ति पूजा किये जाने के प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वेद नाम से प्रसिद्ध चार मन्त्र संहितायें ईश्वरीय ज्ञान हैं जिनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों से मूर्तिपूजा अर्थात् ईश्वर के स्थान पर पाषाण व धातु आदि की मूर्ति को ईश्वर मानकर पूजा करने का खण्डन होता है। यह कृत्य ऐसा ही है जैसे कि माता-पिता घर में विद्यमान हैं, उनका पुत्र उनकी अनदेखी करके उनके चित्र पर पुष्प-माला व पुष्प, फल, जल, अन्न आदि भेंट कर रहा है या उनके नाम पर पुजारियों को अन्न व धन दान दे रहा है। माता-पिता यह देख कर चिन्तित व दुःखी हो रहे हैं

thearyasamaj.org

परन्तु वह पुत्र उनकी भावनाओं व इच्छाओं पर ध्यान नहीं दे रहा है। पुत्र की भांति ऐसी ही स्थिति मूर्तिपूजा करने वालों की है जिनसे सच्चा ईश्वर कुपित है। शिव-पूजा के सन्दर्भ में लगता है कि बौद्धों व जैनियों से प्रभावित होकर हमारे अल्पज्ञानी या अज्ञानी व कुछ-कुछ स्वार्थ से प्रेरित लोगों ने ऐतिहासिक महान पुरूष भगवान शिव की उपासना व पूजा आरम्भ की होगी। उनकी पूजा आरम्भ करने से पहले भक्तों व उपासकों को शिव-उपासना का महात्म्य भी बताना था। इसके लिए उन्होंने शिव पुराण जैसे ग्रन्थ की रचना की। शिव पुराण ही नहीं अपितु सभी पुराणों के वर्णन अविश्वनीय हैं जिन्हें व्यवहार में घटा कर देखने पर वह सत्य सिद्ध नहीं होते। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ऐतिहासिक शिव हुए थे जो बहुत बड़े धर्मात्मा, योगी, व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, संगीत, नृत्याचार्य एवं अनेक विद्याओं में पारंगत थे। इसका सप्रमाण वर्णन पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास' में किया है। जब वैदिक धर्म का ह्रास हो चुका या हो रहा था तब नास्तिक बौद्ध व जैन मतों से रक्षा के लिए सम्भवतः समयानुसार यह पौराणिक शिव उपासना आरम्भ की गई थी। जिन लोगों ने यह पद्धति आरम्भ की वह अपने समय के बहुत बड़े तथाकथित विद्वान रहे होगें। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता वहां अरण्ड के वृक्ष को ही वट-वृक्ष माना जाता है। परिस्थितियों के अनुसार ऐसा होना स्वाभाविक व व्यवहारिक होता है।

इसी प्रकार से पुराणों के निर्माण काल में वेदज्ञ विद्वानों के न रहने पर जो संस्कृत जानने वाले व ग्रन्थ रचना में समर्थ व्यक्ति थे, परन्तु जो वेदों के सिद्धान्तों से या तो अनभिज्ञ थे या फिर कुछ अज्ञान व स्वार्थ जिनमें था, उन्होंने इस प्रकार की पूजा पद्धतियां रच डालीं। प्रश्न पूछने वाले व शंका करने वाले लोग उस समय नहीं थे। जो थे, उन्होंने सत्य मार्ग पकड़ने के स्थान पर अपना नया मत या नया पुराण बना डाला और अन्यों की निन्दा व अपने मत व पुराण की स्तुति की। विद्वानों के अनुसार ऐसा ही वर्णन सभी पुराणों में मिलता है जो यथार्थ न होकर काल्पनिक होने से अविश्वसनीय या त्याज्य है। यहां हम एक उदाहरण देना चाहते हैं। हमारे एक पौराणिक मित्र श्री चन्द्र दत्त शर्मा, फलित ज्योतिषविद्, उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा, माता जी, पत्नी, पुत्र हिमांशु व दो पुत्रियां लगभग 30 वर्ष पूर्व शिवरात्रि के दिन दूरदर्शन पर शिवरात्रि का कार्यक्रम देख रहे थे। श्री शर्मा शिक्षा काल में ही आर्य समाज के सम्पर्क में आये परन्तु रहे अधिकांशतः पौराणिक व कुछ थोड़े आर्यसमाजी। उनका परिवार पौराणिक व आर्य समाज के विचारों का मिश्रित रूप था। उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा भी प्रमुख फलित ज्योतिषविदों में थे। शिवलिंग की पूजा का दृश्य दिखाये जाने पर सब घर वालों ने हाथ जोड़ कर अपनी श्रद्धा व भक्ति का परिचय दिया परन्तु पुत्र हिमांशु ने न तो सिर ही झुकाया और न हाथ ही जोड़े। दादा जी के हाथ जोड़ने के लिए कहने पर उसने कहा-'मैं हाथ क्यों जोडू, यह कोई भगवान थोड़ी है, यह तो पत्थर है।' शर्मा जी ने इस घटना का पूरा विवरण बाद में मिलने पर हमें बताया। अब यह बालक बड़ा हो गया है तथा पढ़-लिख कर स्मृद्ध व सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं और विचारों से प्रायः पौराणिक ही है। मूर्तिपूजा की एक शिक्षाप्रद घटना आर्य समाज के विद्वान गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर से जोड़कर सुनाते हैं। एक बार बहुत दूर से आये एक ग्रामीण वृद्ध बन्धु ने शिवरात्रि के दिन सोमनाथ मन्दिर में पूजा-अर्चना की और बाहर न जाकर हाथ जोड़कर श्रद्धान्वत वहीं खड़ा रहा। उस दिन वहां भीड़ अधिक होने व अव्यवस्था की आशंका के कारण पुजारी द्वारा उसे डांटने पर उसने कहा कि 'वह बहुत दूर से आया है, उसे खड़ा रहने दें। शायद् भगवान उसे दर्शन दे दें।' यह सुनकर पुजारी क्रोधित होकर बोला कि 'हमें व हमारे पूवर्जों को वर्षों यहां पूजा कराते हो गये, हमें तो आज तक दर्शन दिये नहीं, तुझे क्या दर्शन देगें ?' हमारा अनुमान है कि आज तक किसी मूर्तिपूर्वक को ईश्वर के साक्षात दर्शन या साक्षात्कार नहीं हुआ है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यदि किसी को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ हो तो वह योग साधना आदि कर्मों व साधनों से ही हुआ होगा। अतः मूर्तिपूजा निरर्थक सिद्ध होती है, निरर्थक इसलिए कि इससे उपासना व पूजा का मुख्य उद्देश्य ''ईश्वर का साक्षात्कार'' पूरा नहीं होता और उपासना से जो ईश्वरीय गुण, सदाचार अर्थात् आचरण की पूर्ण पवित्रता व शुद्धता, परोपकारिता, दया, करूणा, धैर्य आदि उपासक में आने चाहिये, उसके स्थान पर बुद्धि की जड़ता-मलिनता-अपवित्रता, सत्य का चिन्तन व विचार करने में असमर्थता, सत्य को स्वीकार न करना आदि जैसे गुण-अवगुण उपासक में आते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती घर से निकलकर योगियों, संन्यासियों, विद्वानों की खोज करते हुए उन्हें जो मिलता उससे योग व उपासना के साधन सीखते हुए आगे चलकर मथुरा के प्रज्ञाचक्षु स्वामी गुरू विरजानन्द सरस्वती के अन्तेवासी शिष्य बने। लगभग 3 वर्षों में उन्होंने उनसे आर्ष व्याकरण व आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन पूरा किया। व्याकरण पढ़कर वह वेद व इतर वैदिक आर्ष ग्रन्थों के आशय, उद्देश्य, उनमें निहित सत्य व अन्यान्य विषयों को समझने की योग्यता उन्होंने प्राप्त की। वह जान गये कि मूर्तिपूजा, अवतारवाद, विभिन्न पौराणिक व्रतोपवास आदि अनार्ष व वेद विरुद्ध कर्मानुष्ठान से किसी आध्यात्मिक लाभ या लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती। इसके स्थान पर योग दर्शन के अनुसार साधना करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है। बुद्धि सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होती है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के अनेक रहस्यों का बोध होता है। ईश्वर साक्षात्कार की अवस्था आने पर सभी आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक क्लेशों से मुक्ति मिलती है। ध्यान व समाधि में ईश्वर के सान्निध्य से आत्मा आनन्द की अनुभूति करता है। जिस प्रकार शीतल जल से स्नान करने पर शरीर की उष्णता समाप्त होती है, इसी प्रकार समाधि में ईश्वर से संयोग होने पर सभी दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख दूर होकर आनन्द की प्राप्ति व ईश्वर के स्वरूप में एकाग्रता आती है। यही कारण है कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सभी ज्ञानी व योगी मनुष्य विरक्त होकर ध्यान व समाधि द्वारा ईश्वरोपासना, जिसमें स्तुति व प्रार्थना भी सम्मिलित है, करते आये हैं। क्या यह सम्भव है कि जीवन भर स्तुति, प्रार्थना व उपासना के करने से यदि उन्हें इष्ट लक्ष्य, ईश्वर साक्षात्कार, दुःखों की निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति, न होती तो वह ईश्वर की उपासना का उपदेश

thearyasamaj.org

करते, विविध ग्रन्थों की रचना कर इनके पक्ष में प्रमाण देते और उपनिषद जैसे उच्च आध्यात्मिक ग्रन्थों की भी रचना करते ? विवेचना से यह सिद्ध है कि समाधि सिद्ध होने पर प्राप्त होने वाले लाभों का उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ था व समाधि की उपलब्धियां भी प्राप्त हुई थीं। यही कारण है कि स्वामी जी ने गुरु विरजानन्द की कुटिया से विदा लेने पर 1 वर्ष से अधिक आगरा में निवास किया व अपनी पहली पुस्तक सन्ध्या, ईश्वरोपासना पर ही लिखी। सन्ध्या क्या है, हमारे लिए सृष्टि की रचना करने व हमें मानव जन्म देने के लिए ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए की जाने वाली स्तुति, प्रार्थना व उपासना की विधि है जिसके सिद्ध होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। उन्होंने सन्ध्या में लिखा है कि 'हे ईश्वर दयानिधे, भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिर्भवेन्।' यह वाक्य और किसी पर चरितार्थ हो या न हो, परन्तु महर्षि दयानन्द पर पूर्णतः चरितार्थ हुआ था। हमें प्रतीत होता है कि यहां काम से अभिप्रायः समाधि में प्राप्त होने वाले ईश्वर के आनन्द से है और मोक्ष का अर्थ पूर्ण दुःखों की निवृत्ति है। इसके साथ ही मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण से छूटना भी है जो कि उनकी मृत्यु के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ होगा, ऐसा अनुमान से कह सकते हैं। सन्ध्या का वैदिक जीवन पद्धति में शीर्षस्थ स्थान है। अन्य सभी कर्त्तव्य व कर्मकाण्ड सन्ध्या के पूरक है। सन्ध्या विहीन मनुष्य की नास्तिक संज्ञा है।

स्वामी दयानन्द जब अपने गुरू विरजानन्द की कुटिया से निकले तो उनके सामने संसार में आर्ष ज्ञान को प्रतिष्ठित करने का महान लक्ष्य व कार्य था। इसके लिए उन्होंने आगरा में एक वर्ष से अधिक अवधि तक रहकर अपनी योजना तैयार की। उन दिनों की परिस्थितियों के अनुसार इसके लिए उन्होंने मौखिक उपदेश, वार्तालाप, विचार-विनिमय, शंका समाधान, शास्त्रार्थ व शास्त्र-चर्चा तथा ग्रन्थ लेखन को अपना साधन बनाया। आगरा से आरम्भ होकर जोधपुर में प्रचार करने व मृत्यु तक वह इन्हीं साधनों का भरपूर उपयोग करते रहे। उनके कार्यो में विरोधियों, पौराणिकों, विधर्मियों, विदेशी शासकों ने कठिनाईयां पैदा कीं। लगभग 17 बार उन्हें विष देकर उनकी जीवन लीला समाप्त करने का भी प्रयास किया गया परन्तु वह अपने जीवन की अन्तिम श्वास तक डटे रहे और अविद्या व अज्ञान का नाश तथा विद्या की वृद्धि करने के लिए दृढ़ता से वेदों का प्रचार करते रहे।

ऐसा देखा गया है कि कभी-कभी बुरे काम में भलाई या विष में से अमृत निकल आता है। महर्षि दयानन्द को शिवरात्रि की मिथ्या पूजा-उपासना से ही ईश्वर के शिव-स्वरूप को खोजने, उसे प्राप्त करने, बन्धनों व दुःखों से दूर होने की प्रेरणा व शिक्षा मिली थी। उन्होंने कालान्तर में ईश्वर के शिव अर्थात् कल्याणकारी स्वरूप को जाना तथा उसको प्राप्त करने की योग दर्शनकार महर्षि पतंजलि द्वारा निर्मित उपासना पद्धति के ग्रन्थ योग दर्शन का अभ्यास कर स्वयं ईश्वर को प्राप्त किया। संसार के कल्याण की भावना से वेद व योग दर्शन के आधार पर एक संक्षिप्त लघु आर्ष ग्रन्थ पंचमहायज्ञ विधि के नाम से प्रकाशित कराया जिसमें प्रथम सन्ध्या की विधि दी गई है। वैदिक साहित्य में ईश्वरोपासना पर लिखा गया यह ग्रन्थ अन्यतम है। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने लिखा है कि काशी के एक सुविख्यात पौराणिक विद्वान को जब यह सन्ध्या पद्धति दी गई तो उन्होंने अनेक वर्षों से की जाने वाली अपनी सन्ध्या को छोड़ कर इसे अपना लिया। बाद में जब पता चला कि यह तो स्वामी दयानन्द ने लिखी है तो वह हैरान हुए और पण्डितजी से पूछा कि क्या स्वामीजी इतने बड़े विद्वान थे ? वह तो समझते थे कि स्वामी दयानन्द कोई अल्प ज्ञानी हैं व अनाधिकार मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। ईश्वर प्रदत्त पूर्ण सत्य वैदिक मत पर यूरोप, एशिया, अरब आदि विश्व के सभी भागों में बसे स्त्री-पुरुषों का समान व पूरा-पूरा अधिकार है। उन्हें उनका अधिकार दिलाने तथा वेदों का महत्त्व बताने के लिए, अपने प्राणों का मोह त्याग कर संसार के कल्याण की भावना से प्रत्येक मानव को ईश्वर का साक्षात-दर्शन कराने के लिये वह क्रुद्ध व हिंसक विरोधियों के बीच कूद पड़े।

हम समझते हैं कि स्वामी जी वेदों को ईश्वर से उत्पन्न आदि-ज्ञान, धर्म व आचरण का मूल धर्म-ग्रन्थ सिद्ध करने में पूर्ण सफल हुए हैं। यह चार वेद ईश्वर का नित्य ज्ञान है जो सदैव एक समान रहता है। इसमें किसी प्रकार की भी अपूर्णता नहीं है। अज्ञानी मनुष्य उनके मिशन को समझ ही नहीं पाये तथा स्वार्थों व अविद्या से ग्रन्थ शिक्षित मतावलम्बियों ने भी उनके भावों को समझने का प्रयास नहीं किया। वह सब अपने-अपने हवा-महल रूपी मत-मतान्तरों को बचाने में लगे रहे। आज संसार में तर्क, युक्ति व प्रमाण की कसौटी पर केवल वेद व उसकी मान्यतायें ही स्थिर हैं जिन्हें वेद-व्याकरण-निरूक्त-युक्ति व प्रमाणों के आधार महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। अतः स्वामी दयानन्द आज धर्म के सच्चे जिज्ञासुओं के यथार्थ समाधान के एकमात्र अधिकारी विद्वान के गौरवमय स्थान पर सुशोभित हैं। अन्य कोई महापुरूष या विद्वान उनकी स्थिति में नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, जन्म मरण से मुक्त है तथा उसका अवतार नहीं होता। न कोई उसका एकलौता पुत्र हुआ और न उसे अपने लिए किसी सन्देशवाहक की आवश्यकता पड़ती है। इस सम्बन्ध में जो बातें हैं, वह भोले धार्मिक लोगों में भ्रान्ति उत्पन्न करती हैं। सर्वशक्तिमान होने के कारण उसका एकमात्र पुत्र होना व अपने किसी सन्देशवाहक को भेजे जाने की मान्यतायें मिथ्या व असत्य सिद्ध होती हैं। स्तुति, प्रार्थना व उपासना एक प्रकार से यम-नियम का पालन, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान व समाधि को सिद्ध करना है जिससे उपासना की सफलता होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। इसके साथ ही स्तुति, प्रार्थना व उपासना से बुरे व पाप कर्मों का भविष्य के सन्दर्भ में क्षय होकर, मुक्ति, मोक्ष, जन्म-मरण से छुट्टी, सभी दुःखों की निवृति व ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त होता है। लगभग 3 नील 40 खरब वर्षो तक जन्म-मरण से मुक्त, पूर्ण आनन्द की अवस्था में रहकर मुक्त जीवात्मा पुनः मनुष्य जन्म पाता है। यह उपलब्धि जिज्ञासु, सत्यान्वेषी, धर्म प्रेमी, ईश्वर भक्त, सारे संसार को अपना परिवार समझने, मानने वाले सच्चे व सफल ईश्वरानुयायी, मुक्त जीवात्मा को प्राप्त होती है। आज महर्षि दयानन्द संसार में नहीं हैं, परन्तु वह अपने यशः शरीर से जीवित हैं। वह निश्चित ही ईश्वर को प्राप्त हुए होंगे और आज मोक्षावस्था में वह पूरे पृथिवी लोक का भ्रमण कर संसार के मनुष्यों

thearyasamaj.org

की अवस्था को देखते होंगे। आर्य समाज की वर्तमान स्थिति को देखकर उन्हें दुःख भी अवश्य होता होगा। वह ईश्वर के जीव-कर्म-स्वातंत्र्य सिद्धान्त को जानने के कारण ईश्वर को कुछ कह भी नहीं सकते। वह ईश्वर से केवल यही प्रार्थना करते होंगे कि आर्य समाजी व संसार के सभी सत्पुरुषों के हृदयों में सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग की निरन्तर प्रेरणा करते रहें, परन्तु यह मनुष्य सांसारिक सुखों से इतने अधिक आसक्त हैं कि अधिकांश मनुष्यों को सत्य-असत्य से कोई लेना-देना ही नहीं है। बहुत से लोग तो सत्य को जान लेने पर भी आसक्ति में फंसे होने के कारण कुछ कर ही नहीं पा रहे हैं। देश में लगभग 1 हजार वैदिक गुरूकुल होने पर भी हम विद्वान तो बहुत बना रहे हैं परन्तु गुरूकुल व आर्य समाज की सभी संस्थायें मिलकर भी अभी तक एक स्वामी दयानन्द नहीं बना सकीं। हम तो आज भी स्वप्न देखते हैं कि गुरूकुल का हर ब्रह्मचारी दयानन्द बनकर संसार से अज्ञान तिमिर का नाश करे। क्या वर्तमान या भविष्य में दयानन्द के समान ब्रह्मचारी, योगी, ईश्वर भक्त, विद्वान, ज्ञानी, ऋषि, मनीषी, मुनि, विश्व प्रेमी, वेदभक्त व वेदमाता का सच्चा पुत्र हममें से कोई बन सकेगा ? दयानन्दसम बनना ही संसार भर में मनुष्य जीवन का एक आदर्श लक्ष्य है।

वर्तमान काल को ज्ञान का युग भी कह सकते हैं। आज भारत में वर्ण व्यवस्था के विकृत रूप 'जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था' की जो स्थिति है, वह देश व समाज के लिए अहितकर है। यद्यपि आजकल समाज में गुण-कर्म-स्वभाव प्रधान प्रेम विवाह भी हो रहे हैं परन्तु आज जातिवाद की जड़ें स्वामी दयानन्द के समय की ही भांति समाप्त होने के स्थान पर दृढ़ व गहरी हुई प्रतीत होती हैं। हमें अपने क्षेत्र व आसपास स्वयं को ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य कहने व कहलाने वाले बन्धुओं को मांसाहार, मदिरापान, अण्डे व सिगरेट आदि के सेवन में लिप्त देखकर आश्चर्य होता है। क्षत्रिय व वैश्यों का स्थान तो वरिष्ठता में दूसरा व तीसरा है पर जब स्वयं को प्रथम स्थान पर मानने वाले ब्राह्मण ही, ब्रह्म=ईश्वर में सतत् विचरण करने वाले ही, मांसाहारी, मद्यपायी, अभक्ष्य-भक्षी हों, ऐसे समाज में वैदिक क्रान्ति का सफल होना अत्यन्त कठिन है। वैदिक विचारधारा का महत्व प्रतिपादित कर आज सन्ध्या, यज्ञ, माता-पिता-आचार्य-वृद्धों का सम्मान-सत्कार-सेवा-आज्ञापालन, गौरक्षा व हिन्दी रक्षा के पक्ष में तथा मांसाहार, मद्यपान, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मत-मतान्तर, जन्मजाति के विरुद्ध जन आन्दोलन व अभियान चलाया जाना चाहिये। आध्यात्मिक व सामाजिक क्रान्ति के बिना देश बदलेगा नहीं। हमें यह समझना है कि आर्य समाज कोई सन्ध्या, हवन, सत्संग या वार्षिकोत्सव करने-कराने वाली संस्था मात्र नहीं है अपितु आर्य समाज एक अग्निमय आन्दोलन है जिसका उद्देश्य सत्य-वैज्ञानिक वैदिक विचारधारा का सर्वत्र प्रचार-प्रसार व व्यवहार तथा वैदिक मान्यताओं की विश्व स्तर पर स्वीकारोक्ति के उद्देश्य की प्राप्ति तक सतत् संघर्ष कर समाज में क्रान्ति करना है। आर्य समाज के विद्वानों, नेताओं अधिकारियों व सदस्यों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी योग्य है।

ऋषि दयानन्द ने योगाभ्यास एवं वेद विद्या की प्राप्ति में नानाविध तप किया, कष्ट सहे, समाधि के सुख को छोड़कर वेदों के प्रचार व सत्य के ग्रहण करने-कराने में प्रशंसनीय कार्य किया, अपमान व विरोध सहा तथा अनेकों बार विषपान किया। देश व समाज के लिए इतना कुछ करने पर भी उन्हें सम्मान मिलने के स्थान पर अपनों ने एक प्रकार से विष ही परोसा। उन्होंने विश्व, देश व समाज की भलाई के लिए आर्य समाज की स्थापना, सत्य ज्ञान से पूर्ण वेदों का प्रचार, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का प्रणयन, ऋग्वेद का आंशिक तथा यजुर्वेद का पूर्ण वेद-भाष्य, शास्त्रार्थ, देश-देशान्तर में सत्य व वैदिक मान्यताओं का प्रचार, असत्य का खण्डन व सत्य का मण्डन, लेखन, उपदेश, प्रवचन, पत्रव्यवहार, श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड भेजकर वेद प्रचारार्थ विदेशी प्राच्य विद्याविद्ों को आर्यमत के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने की प्रेरणा व प्रयत्न, भारतीय युवकों को प्रौद्योगिकी के प्रशिक्षण के लिए जर्मनी भेजने का सक्रिय प्रयास आदि कार्य देश, समाज व संसार के सभी लोगों के लिए अमृत के समान हैं। उन्होंने ही ईश्वर की उपासना के फल धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का उल्लेख कर सभी मनुष्यों को समस्त दुःखों से छुड़ाकार इसके साथ 31 नील 10 खरब वर्षों तक मोक्ष में रहते हुए ईश्वर के सान्निध्य व आनन्द में बिताने के साधन भी बताये। यह सब एक प्रकार से उनके द्वारा संसार के प्रत्येक मनुष्य को अमृत पान कराने के समान उनके श्रेष्ठ उपकार हैं। हम समझते हैं कि आज विश्व की जनसंख्या लगभग 7 अरब के बराबर है। अभी सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्ष है। इस अवधि में हमारी गणना के अनुसार न्यूनतम 65,52,00,000 अरब लोग जन्म लेगें व मृत्यु को प्राप्त होगें। उनके द्वारा अन्वेषित-प्रदत्त कर्मफल सिद्धान्त, सत्य वैदिक धर्म के अनुसार जीवनयापन व जन्म-मरण के दुःख से छूटकर मोक्ष प्राप्ति के उपायों को करके सभी लोग लाभान्वित व कुछ सफल भी हो सकते हैं जिसका श्रेय स्वामी दयानन्द को होगा। यही नहीं उनके द्वारा प्रचारित सिद्धान्तों से संसार को स्वर्ग भी बनाया जा सकता है। इसके लिए सारे संसार के लोगों से वेद मत को स्वीकार कराकर उसके अनुसार सर्वत्र वेदानुसार शासन-व्यवस्था को व्यवहारिक रूप देना है। यह कार्य असम्भव नहीं है। यह कार्य तो ईश्वर का कार्य है। महाभारत काल तक जिस प्रकार से सारे संसार में केवल एक वैदिक मत था उसी प्रकार भविष्य में भी हो सकता है। हमें बस अपने कर्त्तव्य व दायित्व को जानकर उसका निष्ठा से पालन करना है। महर्षि दयानन्द इस कार्य के लिए शैक्षिक व वैचारिक आधार तैयार कर गये हैं। देखना यह है कि यह सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्षों में कब पूरा होता है। यदि यह कार्य पूरा होगा तो मनुष्यों व जीवात्माओं के लिए जन्म-जन्मान्तरों तक दुःखों से निवृत्ति व मोक्ष का मार्ग खुलेगा। यदि किसी कारण से नहीं होता तो वर्तमान में वह मार्ग बन्द तो है ही, आगे भी बन्द रहेगा। महर्षि दयानन्द को उनके बोध दिवस व शिवरात्रि पर हमारी यह शब्दमय श्रद्धांजलि प्रस्तुत हैं। हम उनके स्वप्नों के साकार होने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। ईश्वर उपासकों की पुरुषार्थ से पूर्ण सच्ची प्रार्थनायें स्वीकार करता है, शायद यह प्रार्थना भी कर ले।

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार-बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	ललित मोहन पाठक	ललित कुमार शर्मा	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।
2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।
4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भंडारी	विनोद भारद्वाज़	मीनाक्षी शर्मा
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और पालन ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्त	एस.के. बारिया
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेंटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद कुमार	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुहयन्ति नराः पण्डित बुद्धय्॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े-बड़े दुःखों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

–महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित शर्मा	ललित मोहन पाठक	प्रवीण मल्होत्रा
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. *शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।*
2. *धार्मिक शिक्षा।*
3. *कम्प्यूटर शिक्षा।*
4. *हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।*
5. *विशाल क्रीडा क्षेत्र।*
6. *सुन्दर भवन।*
7. *हरे-भरे वृक्ष।*
8. *उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।*
9. *हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।*

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

इन्द्रदेव गौतम	जिया लाल शर्मा	अंचला भल्ला	सतीश कश्यप
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन , नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

विनोद कुमार भारद्वाज	एस.के.बरूटा	डा. सरोज भल्ला
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढाओ।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा.रमेश चन्द्र तेजपाल
प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

रमेश जोशी	**विनोद गांधी**	**विजयपाल**
उप प्रधान	**मैनेजर**	**कार्यकारी प्रिंसीपल**

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

वेद शास्त्रों को पढ़ने वाला व्यक्ति निर्धन भी अच्छा है परन्तु शास्त्र के अध्ययन से रहित और आचरणहीन मनुष्य धनवान भी अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रों वाला फटे पुराने कपड़ों में भी सुन्दर लगता है परन्तु नेत्रहीन सोने के गहनों से सजा हुआ भी शोभित नहीं होता है।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल

पुराना बाजार, नजदीक दरेसी मैदान, लुधियाना

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम में शिक्षा।
2. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
3. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
4. खुले व हवादार कमरे।
5. सांस्कृतिक गतिविधियां।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां व वर्दियों का प्रबन्ध।
8. कॉमर्स एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल में स्वच्छ जल के लिये फिल्टर्ज की व्यवस्था।
10. जरूरतमंद छात्राओं के लिये वर्दियों और स्वैटरस वितरण।
11. प्रतिवर्ष बच्चों की भलाई और कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	राजेश शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ– हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री–नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंगलिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार
प्रधान

सुनीता मलिक
प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

मालवा का शान्ति निकेतन

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

+1 और +2 के साथ-साथ बी.ए. तृतीय वर्ष तक पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से सम्बन्धित संस्था

1. Post Graduate Diploma in Computer Application.
2. Post Graduate Diploma in Dress Designing & Tailoring (both affiliated to Punjabi University Patiala)कोर्स भी चल रहे है। इस कालेज में पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इक्नामिक्स, राजनीति शास्त्र, इतिहास, संगीत, फिलास्फी विषयों के साथ-साथ कम्प्यूटर, आफिस मैनेजमेंट, होम मैनेजमेंट, फाईन आर्ट्स के विषय भी पढ़ाये जा रहे हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला का केवल यह एक कालेज है जहां फैशन डिजाइनिंग का विषय भी पढ़ाया जाता है।

यू.जी.सी. स्कीम अधीन कई अन्य विषय/ कोर्स शुरू किये गए हैं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

★★★

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तीर्थः- जितने विद्याभ्यास, ईश्वरोपासना,धर्मानुष्ठान , सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियादि उत्तम कर्म हैं, वे सब 'तीर्थ' कहाते हैं क्योंकि इन करके जीवन दुखसागर से तर जा सकते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्‌चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

■ विशेषताएं ■

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्‌यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवायें। सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी
प्रधान

भारत भूषण मेनन
मैनेजर

राजेश कुमार गांधी
सैक्रेटरी

उर्मिल सिंगला
प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के

पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।
- योग शिक्षा पर विशेष बल।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**संजीव शोरी**
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	मैनेजर
भारत मोदी	**श्रीमती सुमन अग्रवाल**	**डा. एच.कुमार कौल**
सचिव	कार्यकारी प्रधानाचार्य	डायरैक्टर

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

1. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में बरनाला जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।
2. समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।
3. कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर तथा प्राथमिक सहायता की सुविधा।

☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन
प्रधान

भारत मोदी
उपप्रधान

पवन सिंगला
उप प्रधान

संजीव शोरी
सैक्रेटरी

बसंत शोरी
मैनेजर

अनिता मित्तल
डायरैक्टर

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

कुलवन्त राय अग्रवाल	तरसेम कुमार आर्य	निहाल चंद एडवोकेट	सुषमा कुमारी
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये, त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्, रूतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम, शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।

हे श्रेष्ठ पुरुषो। आप हमें दुखों से बचाने के लिये अधिकारपूर्वक उत्तम उपदेश सुनाओ। हे विद्वानों हम दुःख प्रगति में जब पड़ें तब आप दुखियों की सच्ची टेर सुनने वाले हमारे दुख सुन कर हमारा त्राण करो। अपनी रक्षा और कल्याण के लिये हम दुखी जन आपको पुकारते हैं।

❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस और बोध पर्व के अवसर पर
आर्य बन्धुओं व मातृ शक्ति को
हार्दिक शुभ कामनाएं

❖

आर्य समाज, बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

❖❖❖❖❖❖

धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आर्य समाज को अपना सहयोग दें, साप्ताहिक आर्य मर्यादा पढ़ें, आर्य मर्यादा के सदस्य बनें। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र है।

दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

ओम प्रकाश भाटिया प्रधान	**सुरेश महाजन** वरिष्ठ उप प्रधान	**शशि कोमल** महामन्त्री
पुरुषोत्तम शर्मा उप प्रधान	**पी.के.त्रिपाठी** प्रचार मंत्री	**ऋचा सचदेवा** कोषाध्यक्ष

thearyasamaj.org

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिंडा

विशेषताएंः

Ph.No.0164-2238328

1. नगर के नगर के मध्य स्थित।
2. योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।
3. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।
4. शानदार परीक्षा परिणाम
5. नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर
6. प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, आर.ओ.पानी, आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी.गोयल एडवोकेट
प्रधान

जगदीश राय बांसल
मन्त्री

नवनीत कुमार
कोषाध्यक्ष

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्यः- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है।

(महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**विजय अग्रवाल**	**सोनिया सच्चर**
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थ:-अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर,वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

❖❖❖

■ प्रमुख विशेषताएं ■

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।
2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।
4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।
5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।
6. प्राकृतिक वातावरण।
7. खुले व हवादार कमरे।
8. बड़ा खेल का मैदान।
9. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

महेश चन्द्र भल्ला
प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

अविद्याः- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित् व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश	दर्शन कुमार	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

❋❋❋

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❋❋❋

हार्दिक शुभकामनाएं

❋❋❋

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

❋❋❋

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तरकार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

❋❋❋

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा	**सुधीर शर्मा**	**मीनू कपूर**
प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

सतीश कुमार शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हिंतकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधपर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❐ विशेषताएं ❐

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा	योगेश गोयल	अश्विनी कुमार शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	संयुक्त सचिव
डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति	डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति	डी.एम.कालेज प्रबन्धक समिति
मोगा	मोगा	मोगा

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

योगेश गोयल
उपप्रधान

अश्विनी कुमार शर्मा
ज्यायंट सैक्रेटरी

प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

शिष्टाचारः जो धर्माचरणपूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना है। यही शिष्टाचार और जो इसको करता है वह 'शिष्ट' कहाता है। स्वामी दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज, रायकोट

(पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आर्य विद्या परिषद पंजाब के निर्देशन में निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर

स्नातकोत्तर विभागः- एम.ए.(पंजाबी), एम.ए. (राजनीति शास्त्र), एम.कॉम, एम.एस.सी. आई.टी., पी.जी.डी.सी.ए.।

स्नातक विभागः- बी.सी.ए., बी.कॉम, एवं बी.ए.

बी.ए.कोर्स के विषयः-मैथ (गणित), इक्नोमिक्स (अर्थ शास्त्र), हिस्टरी (इतिहास), राजनीति शास्त्र, शारीरिक शिक्षा, अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, म्युजिक वोकल, म्युजिक इन्सट्रूमेंटल तथा कम्प्यूटर साईंस।

एड. ऑन कोर्सः- (1) फैशन डिजाइनिंग, (2) कास्मेटीलोजी (Beautician)

संस्था के विशेष आकर्षण एवं प्राप्तियां:

- यू.जी.सी. द्वारा सहायता प्राप्त आधुनिक लैंग्यूएज लैब का विशेष प्रबन्ध
- लोक वाद्य यंत्र, इलैक्ट्रोनिक बाद्य यंत्र तथा तंत्र-वाद्य यंत्रों द्वारा सुसज्जित संगीत-साज तथा आवाज लैब का प्रबन्ध
- आधुनिक तकनीक से सुसज्जित माइक सिस्टम का विशेष प्रबन्ध
- सीसीटीवी कैमरे तथा इंटर-कॉम का खास प्रबन्ध
- आधुनिक कम्प्यूटर, फैशन डिजाइनिंग तथा कॉस्मैटोलोजी लैबस
- आधुनिक लाइब्रेरी, खेल मैदान तथा खूबसूरत लॉन
- एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. यूनिट
- सुन्दर व स्वस्थ हॉस्टल का प्रबन्ध
- छात्राओं के आने जाने की सुविधा हेतु बसों का प्रबन्ध
- गरीब छात्राओं हेतु मुफ्त कोचिंग का प्रबन्ध
- एस.सी., बी.सी. तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्राओं हेतु स्कॉलरशिप
- यूथ फेस्टिबल में ऑवर ऑल ट्राफी की प्राप्ति
- पावर लिफ्टिंग में नेशनल तथा स्टेट लेवल इनाम की प्राप्ति
- शानदार परीक्षा परिणाम एवं एम.ए. पंजाबी तथा राजनीति शास्त्र में पंजाब विश्वविद्यालय में उच्च स्थान की प्राप्ति

अपनी लड़कियों के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

रमेश कौड़ा	**डा. राजिन्द्र कौड़ा**	**डा.सविता उप्पल**
प्रधान	**सैक्रेटरी**	**प्रिंसीपल**

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उस को 'पंडित' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य माडल हाई स्कूल, मोगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद पंजाब के दिशा निर्देश में निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर

विशेषताएं

45602744

1. नगर के मध्य में स्थित।
2. भव्य इमारत, खुले व हवादार कमरे।
3. उच्च शिक्षित व अनुभवी अध्यापक।
4. प्रदूषण व ध्वनि रहित जैनरेटर व स्वच्छ जल का उचित प्रबन्ध।
5. खेलने के लिये खुला मैदान।
6. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
8. शानदार परीक्षा परिणाम।

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य व सर्वत्तोन्मुखी विकास के लिये

सम्पर्क करें

सत्यप्रकाश उप्पल	नरेन्द्र सूद	नीरज सूद	श्रीमती जनक मजीठिया
प्रधान	प्रबन्धक	सचिव	प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

पंजाब भर से आए हुए आर्य समाजों के प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) में भाग लेते हुए।

thearyasamaj.org

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–0011/2012-14 आर्य मर्यादा साप्ताहिक आर. नम्बर 26281/74

अधिवेशन से पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के कार्यालय में बनी यज्ञशाला में यज्ञ करते हुए सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री अशोक पुरूथी जी, श्री परमदेव मीमांसक, श्री विमल वधावन जी, श्री स्वतंत्र कुमार जी उप प्रधान, श्री सरदारी लाल जी आर्य उप प्रधान, श्री सुधीर शर्मा जी कोषाध्यक्ष, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी उप प्रधान एवं अन्य प्रतिनिधि महानुभाव। **साथ चित्र में आशीर्वाद देते हुये प्रतिनिधि.**

अधिवेशन के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के कार्यालय में प्रतिनिधि महानुभाव भोजन करते हुए।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।